अन्तिम अवतार

हिन्दी मासिक पत्रिका

सम्पादकीय कार्यालय

डा.नूरूल हसन

निकट एस.बी.एस. इण्टर कालेज,
आरा मशीन के सामने,कन्नौज–209726
मोबा.9838739134, 9369783377
ई मेलःantimavtarhindi@gmail.com

सदस्यता

प्रति पत्रिकाःरू.20/–
वार्षिक सदस्यताःरू.180/–

पत्रिका 'अन्तिम अवतार' में प्रकाशन के लिये इस्लामिक, सामाजिक, एतिहासिक एवं सम सामयिक निर्विवाद विषयों पर आधारित तथ्यपरक, ज्ञानवर्द्धक व रोचक रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। धार्मिक विषयों पर आधारित केवल वही रचनाएं प्रकाशित की जायेंगी जिनमें तथ्यों की प्रमाणिकता का पूर्ण हवाला दिया जायेगा।

हिन्दी मासिक 'अन्तिम अवतार' के स्वामी/प्रकाशक नूरूल हसन के लिये अमित कटियार द्वारा शिव शक्ति प्रिंटर्स, सेठ जी की कोठी के पीछे, हरदेवगंज, कन्नौज से मुद्रित एवं निकट एस.बी.एस. इण्टर कालेज, आरा मशीन के सामने कन्नौज से प्रकाशित।

संपादकः नूरूल हसन

विषय सूची

संपादकीय

उत्तर प्रदेश की समाजवादी सरकार का एक साल

१५ मार्च २०१३ को सबसे कम आयु के युवा मुख्य मंत्री श्री अखिलेश यादव सरकार अपनी एक साल की उपलब्धियों को लेकर जश्न मना रही है। इस सरकार ने एक साल में जो कर दिखाया है, इतने कम दिनों में जो विकास कार्य किये हैं किसी भी प्रदेश में इसकी मिसाल मिलना नामुमकिन है।

समाजवादी पार्टी ने विधान सभा चुनाव के ऐलानिया (घोषणा पत्र) में जो वादे किये थे सरकार बनने के बाद अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग, और युवा वर्ग कल्याण, अधिवक्ता और सरकारी कर्मचारी कल्याण, व्यापार और उद्योग, कानून व्यवस्था और भ्रष्टाचार को प्राथमिकता देना तय किया गया था।

अल्पसंख्यक कल्याण के अन्तर्गत रंग नाथ कमीशन व सच्चर कमेटी की सिफारिशों के तहत अलग से आबादी के अनुपात में आरक्षण, सरकारी पुलिस और अन्य फोर्स भर्तियों में अलग से भर्ती अभियान, दरगाहों के लिए विशेष पैकेज, वक्फ सम्पत्ति की देख भाल के लिए कानूनी व्यवस्था, प्रदेश के कमीशनो, बोर्डो और कमेटियों में कम से कम एक अल्पसंख्यक सदस्य की नियुक्ति और आतंकवाद की आड़ में गिरफ्तार बेकसूर मुस्लिम बच्चों को रिहा कराना और मुआवज़े का भुगतान कराना वग़ैरह वादे किये गये थे लेकिन अभी तक कोई ठोस कार्यवाही सामने नहीं आयी है। पूर्व रक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश के कई बार रह चुके मुख्य मंत्री और वर्तमान समाज वादी सरकार के संरक्षक धरती पुत्र श्री मुलायम सिंह यादव समाजवादी सरकार को मुस्लिमों की देन बताते हुए नहीं थकते हैं और उनके एहसान का लगातार बखान करते हैं फिर भी उनके हित में तय की गई प्राथमिकताओं को लागू करने में देर क्यों हो रही है? उम्मीद है कि आने वाले लोकसभा चुनाव २०१४ ई० से पहले इन मुद्दों पर ठोस कार्यवाही के नतीजे दिखाई देंगे।

इसके अलावा पिछड़ा वर्ग कल्याण के अन्तर्गत १७ अति पिछड़ी जातियों अनुसूचित जातियों की तरह की सुविधायें प्रदान कर दी गयीं हैं। वकीलों पर आंदोलन के तहत लगे मुकदमें हटाने की कार्यवाही चल रही है सरकारी कर्मचारियों की प्रोन्नतियों में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को लागू कर दिया गया है। प्रतियोगी परीक्षाओं में आयु सीमा ३५ साल से बढ़ाकर ४० साल कर दी गई है। कालेजों में क्षात्र संघ पर लगी रोक हटा दी गई है हाईस्कूल या समकक्ष परीक्षा पास करने वालों को टैबलेट इण्टर अथवा समकक्ष परीक्षा पास करने वालों वालों को लैपटाप बांटे जा रहे हैं। निर्धन बेटियों को हाईस्कूल पास करने पर पढ़ें बेटियां बढ़ें बेटियां के अन्तर्गत और इण्टर पास करने पर कन्या विद्या धन योजना के अन्तर्गत ३० हज़ार रूपये का एकमुश्त भुगतान और शिक्षित बेरोजगारों को एक हज़ार रूपये मासिक बेरोजगारी भत्ता जैसी योजनाओं ने युवा वर्ग में नया जोश भर दिया। चिकित्सा सेवा में समाजवादी एम्बूलेन्स सेवा १०८ सभी रोगियों का भर्ती शुल्क माफ और विधायक निधि से गरीब रोगियों के अनुदान की व्यवस्था कर सरकार ने अनोखे काम किये हैं। प्रदेश में निवेश बढ़ाने के लिए मुख्य मंत्री ने स्वयं पहल कर नई औद्योतिक और सूचना नीति बनवाई है यह कदम प्रदेश की तरक्की में एक पत्थर का मील साबित होगा ।

कुरआन मजीद अन्तिम ईशग्रन्थ

पहली किस्त

डॉ0 इल्तिफ़ात अहमद इस्लाही

आज जहॉ रोज़ नए आविष्कार किए जा रहे हैं, तरह तरह की खोज की जा रही है और संसार विज्ञान के माध्यम से उन्नति के शिखर पर पहुॅच रहा है, वहीं मानव की समस्याऍ ज्यों की त्यों हैं। बल्कि मनुष्य दिन–प्रतिदिन समस्याओं में उलझता जा रहा है, धर्म के नाम पर अंधविश्वास और आडम्बरों के चक्रव्यूह में फॅसा हुआ है, राजनीति के नाम पर हर प्रकार से शोषण किया जा रहा है, आर्थिक ढॉचा असमानता का शिकार है। सुख–शान्ति खत्म हो चुकी है। हिंसा, आतंकवाद, फॉसीवाद, भीषण घोटाले, धन–प्राप्ति के लिए खाने पीने की चीज़ों में मिलावट नशा खोरी औरतों पर अत्याचार, अशलीलता, यौन शोषण, बाल शोषण, देश रंग नस्ल और भाषाके नाम पर नफरत और अलग होने की चाहत, परमाणु युद्ध का खतरा चोर बाजारी जमाखोरी बगैरह अन गिनत समस्याऐं हैं जो मानव और मानव समाज में खून की तरह रच बस गई हैं इनको हल करने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से जो कोशिशें की जा रही हैं उनसे यह समस्याऐं हल होने के बजाये और जटिल होती जा रही हैं।

इंसान की इन समस्याओं का एक मात्र हल ईश्वर और ईश्वर द्वारा दिखाया गया रास्ता है। ईश्वर ने हमें अपनी कुदरत का अनमोल ख़ज़ाना दिया है जिस्मानी शक्तियों का भण्डार, अक्ल व दानिशमन्दी (बुद्धि विवेक) जैसी अनगिनत नेमतें अता की हैं साथ ही मार्गदर्शन भी दिया है जिस पर चलकर सुख शान्ति से भरे जीवन की कल्पना की जा सकती है।

अल्लाह ने अपने आखिरी दूत (नबी) हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के ज़रिये एक किताब भेजी जिसका नाम कुरआन है जो इंसानों को सीधा और सच्चा रास्ता दिखाने के लिए आया है हकीकत में हमारी सभी समस्याओं का हल कुरआन ही के पास है जो एक ईश्वरीय ग्रन्थ है न कि मानव रचित। इसके विषय में कुछ वैज्ञानिक सुबूत भी इकट्ठे किये गये हैं।

–:मानव का पहला जोड़ा:–

संसार यह मानता है कि इस कायनात (ब्रह्माण्ड) का बनाने वाला एक है कोई उसको ईश्वर कहता है तो कोई अल्लाह, खुदा, कोई गाड कहता है। खुदा ने इस कायनात (सृष्टि) के एक छोटे से भाग में ज़मीन बनाई और उसपर बसने के लिये आदमी का एक जोड़ा भेजा कोई उसको एडम और ईव और कोई आदम और हव्वा के नाम से जानता है कोई अन्य किसी नाम से याद करता है खुदा ने इस जोड़े को सुन्दर शरीर अच्छी योग्यतायें और अच्छे बुरे का ज्ञान दे कर आबाद किया है उसकी ज़रूरत की सारी चीज़ें बड़ी तादात में यहॉ लाकर जमा कर दी हैं उसको एक दिमाग़ (मस्तिष्क) और उसकी मदद के लिये पॉच इन्द्रियॉ दीं ताकि वह खुदा की अता करदा चीज़ों का पता लगाये और उनसे फायदा उठाए। इंसान

एक सामाजिक प्राणी है समाज उसकी आवश्यकता है अगर समाज संगठित न हो तो आपस में ही कट मरें ओर खुदा की दी हुई चीज़ें धरी की धरी रह जायें इसलिये खुदा ने इंसान को एक दीन (धर्म) और आईन (कानून) दिया जिससे कि वह शान्ति पूर्वक जीवन गुज़ार सके।

जब इंसान ने खुदा के दिए हुए धर्म और कानून के हिसाब से जीवन आरम्भ किया तो वह बहुत कामयाब हुआ अच्छे इंसान बने अच्छा समाज बना एक दूसरे के लिये प्यार पैदा हुआ समाज में न ऊँच नीच थी न कोई छुआ छूत सब लोग मिलजुल कर प्यार मुहब्बत से ज़िन्दगी बसर कर रहे थे परन्तु कुछ बुरे लोगों को यह बात पसन्द न आई जो चाहते थे कि देश की सारी सत्ता उनके हाथों में हो देश के लोग उनके आगे सिर झुकाए खड़े रहें दुनिया की सारी चीज़ों पर उनका कब्ज़ा हो और बाकी लोग उनके आगे हाथ फैलाए खड़े रहें लेकिन ईश्वरीय धर्म के होते हुए यह बात मुमकिन नहीं थी इसलिये इन दुष्टों ने खुदा के भेजे हुए धर्म और कानून में परिवर्तन और घटाना बढ़ाना शुरू किया और इतना बिगाड़ पैदा कर दिया कि उस कानून में समाज को एक जुट कर ने की क्षमता ही खत्म हो गई। कोई समाज धर्म के बिना एक दिन भी अम्न और शान्ति से ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता इसलिये इंसानों और समाज में ऊँच नीच और छुआ छूत पैदा हो गई। समाज टुकड़ों में बंट गया हर गिरोह एक दूसरे का शोषण करने लगा हर तरफ लूट खसोट और मार पीट शुरू हो गई। खुदा को इंसानों की इस हालत पर रहम आया उसने किसी दूसरे ईश्दूत को धर्म और कानून लेकर फिर भेजा ओर इंसान द्वारा बनाये गये कानून को हटाकर अपने भेजे गये धर्म और कानून को पुनः लागू किया इस तरह खुदाई कानून और इंसानी कानून में उठा पटक चलती रही कभी इसको सफलता मिली तो कभी उसको सफलता मिली इस प्रकार यह लड़ाई बराबर जारी रही।

खुदा का प्रोग्राम तो यह था कि एक खुदा एक ईश्दूत (पैगम्बर) और एक ईश्ग्रन्थ से सारे इंसानों को एक प्लेटफार्म पर जमा कर दे ताकि रोज रोज की उखाड़ पछाड़ खत्म हो जाये लेकिन उस वक्त यह मुमकिन नहीं था इंसान अपनी तरक्की की मंज़िलें तय कर रहा था आने जाने में बहुत कठिनाईयॉ थीं कहीं समन्दर था, कहीं रेगिस्तान, कहीं जंगल था तो कहीं पहाड़। उस ज़माने में इंसान को इन कठिनाईयों को दूर करने की क्षमता नहीं थी। समाज के लिए धर्म और कानून की ज़रूरत होती है बगैर इनके समाज एक दिन भी ठीक तरह से जी नहीं सकता इसलिए खुदा ने अपना धर्म और कानून ईशदूतों (नबियों) को देकर हर कौम और हर मुल्क में भेजा और उस मुल्क की भाषा में ही जीवन सिद्धान्त को पेश किया।

(अन्तिम ईशदूत से पहले दुनिया की हालत)

जब इंसान ने कुछ तरक्की कर ली और आने जाने के साधनों पर कुछ हद तक कंट्रोल कर लिया तो खुदा ने अपने प्रोग्राम के तहत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को पूरी इंसानियत के लिए अपना आखिरी ईशदूत (पैग़म्बर) बना कर भेजा और आपके ज़रिये अन्तिम ईशग्रन्थ कुरआन मजीद भेजा अब न कोई ईशदूत आने वाला है और न कोई ईशग्रन्थ। इसलिये खुदा ने अपने अन्तिम ईशग्रन्थ की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी खुद ही लेली है और वह आज तक सुरक्षित है।

जब खुदा ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को पूरे मानव जगत का आखिरी ईशदूत बनाकर और अपना अन्तिम ईशग्रन्थ (कुरआन मजीद) दे कर दुनिया में भेजा उस वक्त दुनिया का बड़ा बुरा हाल था। अब तक के आये हुये ईशग्रन्थ उलट फेर से बेकार हो चुके थे ईशदूतों की जीवनी किस्सों और कहानियों में गुम हो चुकी थी। सैकड़ों

सालों से कोई ईशदूत भी नहीं आया था पूरी इंसानियत अंधेरे में भटक रही थी। पूरी दुनिया में मूर्तियों की पूजा हो रही थी। समाज टुकड़ों में बटा हुआ था जो एक दूसरे का शोषण कर रहे थे। मिस्र के लोग सूरज को अपना सबसे बड़ा देवता मानते थे और वहाँ के एक चालाक आदमी ने ऐलान किया कि मैं सबसे बड़े देवता की औलाद हूँ अतः मैं फिरऔन (सूर्य की औलाद) हूँ, मिस्र वालों ने उसको सूरज की औलाद मान लिया और मिस्र में उसकी ताक़त वर हुकूमत कायम हो गई क्योंकि कोई समाज अपने देवता से बग़ावत नहीं कर सकता इसी तरह जापान के एक चालाक आदमी ने ऐलान कर दिया कि मैं मीकाडो हूँ यानी सूर्य देवता कीऔलाद हूँ, जापान वाले भी सूर्य को अपना सबसे बड़ा देवता मानते थे। इस प्रकार जापान में उसकी मज़बूत हुकूमत बन गई। इसी तरह हिन्दुस्तान में चाँद और सूरज से नाता जोड़कर चन्द्रवन्शी और सूर्यवन्शी राजाओं ने अपनी हुकूमत को मजबूत बनाया इसी प्रकार पूरी दुनिया में मानव जगत का शोषण हो रहा था मानव जगत की इस दुर्दशा को देखकर बुद्धिमान और सज्जन लोग इस दुर्दशा से मानव को निकालना चाहते थे परन्तु वह जानते थे, कि जब भी कोई जीवन सिद्धान्त बनाया जायेगा तो उसकी शुरूआत तत्वमीमान्सा (मेटा फिजिक्स) से होगी यानी यह ब्रह्माण्ड (कायनात) क्या है, कैसे बना है, कैसे चल रहा है, इंसान कहाँ से आया उसका ब्रह्माण्ड से क्या सम्बन्ध है।

दुनिया में दो तरह की चीज़ें हैं एक वह जिनका अनुभव हम अपनी इन्द्रियों से या अपने वैज्ञानिक यन्त्रों से काम लेकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं अपनी सोच से नये नये फारमूले बना सकते हैं इसमें ईश्वरीय ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं होती है यह क्षेत्र हमारे ही सोच विचार का क्षेत्र है दूसरे किस्म की वह चीज़ें हैं जो हमारी सोच ज्ञानेन्द्रियों और वैज्ञानिक यन्त्रों की पहुँच से आगे हैं जिन्हें न हम तौल सकते हैं न नाप सकते हैं और न अपने ज्ञान से कुछ जान सकते हैं यही वह क्षेत्र है जिसमें इंसान ईश्वर के दिये हुये ज्ञान का मोहताज है और ईश्वर ने यह ज्ञान इस तरह नहीं दिया है कि कोई किताब छाप कर एक एक आदमी के हाथ में देदी हो और कह दिया हो कि खुद पढ़कर जानलो कि तुम्हारी और ब्रह्माण्ड की असलियत क्या है? इस दुनिया में ज़िन्दगी कैसे गुज़ारनी चाहिए? इस ज्ञान को इंसानों तक पहुँचाने के लिये उसने सदैब ईशदूतों को माध्यम बनाया वह्य (प्रकाशना) के द्वारा ईशदूतों को जानकारी दी और उन्हें इस काम पर तैनात किया है कि वह इस ज्ञान को लोगों तक पहुँचा दें।

तत्कालीन विचारक दार्शनिक और समाज सुधारक मानव की दुर्दशा और अज्ञानता से बहुत दुखी थे और वह इंसानों को इस संकट से एक अच्छे जीवन सिद्धान्त द्वारा निकालना चाहते थे वह यह भी जानते थे कि इंसान के लिये जीवन सिद्धान्त केवल तीन तरह के हो सकते हैं।

1. मानव की ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर जीवन सिद्धान्त बना दिया जाये इसको पूर्ण अज्ञान भी कहा जाता है।

2. मानव की ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान के साथ साथ अपने अनुमान और अनुभव से प्राप्त ज्ञान को मिला लिया जाये इसको अनेकेश्वरवादीय अज्ञान भी कहा जाता है।

3. ईश्वर सवयं अपने ईशग्रन्थ द्वारा जीवन सिद्धान्त भेज दे यह तीसरी शक्ल उस समय सम्भव नहीं थी क्योंकि उस वक्त तक ईश्वर की ओर से जितने ईशग्रन्थ आये थे वे सब परिवर्तन का शिकार होकर बेकार हो चुके थे सैकड़ों साल से कोई ईशग्रन्थ भी नहीं आया था। अतः अब उसके पास केवल दो ही साधन रह गये थे पूर्ण अज्ञान और अनेकेश्वरवादीय अज्ञान। .....जारी......

मौजूदा तहज़ीब (संस्कृति) की नाकामी

मौलाना अबुल हसन अली मियां नदवी

दोस्तों और भाईयों यह ज़माना तरक्की का ज़माना है और बहुत सी बातों में पिछले ज़मानों से बहुत ही बढ़ा हुआ है काम करने के ज़राये जहॉ तक ज़माने में इंसान में हमें अता किये हैं इतने कभी नहीं मयस्सर हो पाये थे। ज़रायों (काम के वसीलों) की बहुतात इस दौर की खुसूसियत है आज वसायल एक से एक बेहतर हैं आज हम लखनऊ से दिल्ली चन्द घंटों में बसों, ट्रेनों या कारों से पहुॅच सकते हैं और आधे घंटे में हवाई जहज़ से पहुॅच जाते हैं। यह तो सफर का मामला है पहले हम अपने अजीजों, दोस्तों व रिश्तेदारों की खैरियत मालूम करने के लिय तरसते थे और हफ्तों में खत पत्र पहुॅच पाते थे आज हम फोन टेलीफोन से दुनिया के किसी दूर दराज के कोने से खैरियत ले सकते हैं और बात चीत कर सकते हैं आवाज भी सुन सकते हैं और इस तरह कि गोया जैसे आमने सामने बात कर रहे हैं और इन्टरनेट व फेसबुक की ईजाद ने तो चेहरा बगैरह भी देखना आसान कर दिया है। आने जाने की तेज रफ्तर गाड़ियों के ज़रिये, जहॉ खत हफ्तों में पहुॅचते थे अब हिन्दुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुॅचने में 2 से 3 दिन ही लगते हैं तार इससे भी जल्दी पहुॅचता है एक ज़माना वह था कि जब कोई परदेश कमाने जाता था तो उसकी वापसी में शक बना रहता था और लोग यही सोचकर कहा सुना माफ कराके जाया करते थे और जब बरसों के बाद कोई आता था तो खुदा का शुक्र अदा किया जाता था। लेकिन आज अगर कोई लम्बा सफर करता है तो तो पल पल अपनों को खैरियत बतलाता रहता है और थोड़े अर्से में ही वापस भी आ जाता है। आज हालत यह है कि लन्दन के घंटे की आवाज़ आप लखनऊ में सुन सकते हैं न्यूयार्क में तकरीर करते हुये का बयान यहॉ सुन सकते हैं और देख भी सकते हैं आज से पचास साल पहले यह सब नामुमकिन लगता था लेकिन आज साइंस और टेकनालाजी ने हमें टेली फोन, टेलीवीज़न, वायरलेस, रेडियो और खुर्दबीनों (दुरबीनों) जैसे वसायल (उपकरण) वख्शे हैं अगर आज इन ईजादों पर कोई शक व शुवह करे तो बच्चे तक हसेंगे।

इन साइंसी तहकीकातों ईजादों को देखकर हमारे दिल में बार बार यह हसरत और तड़प पैदा होती है कि अगर इस ज़माने में नेक बनने की ख्वाहिश खुदापरस्त बनने की चाहत, इंसानी हमदर्दी आपसी प्यार व मुहब्बत हमारे दिलों में जगह पा जाती और इन ज़रायों से सही काम लिया जाता तो यह दुनिया जन्नत का नमूना बन जाती, रह रह कर मेरे दिल में एक हूक उठती है और दर्द होता है कि काम करने के प्लेटफार्म तो बहुत हैं लेकिन इन पर काम करने वालों का अकाल है। जिस तेजी से दुनिया में तरक्की हुई है। इंसानियत ने उस रफ्तार से तरक्की नहीं की है आज के इंसान को देखकर दुख होता है कि पहले वह भलाई करना चाहता था लेकिन उसके

पास वसायल (साधन) नहीं थे और और आज जब राहत का हर सामान मौजूद है तो दिलों से भलाई की ख्वाहिश जाती रही है। पहले एक गरीब आदमी परदेश कमाने जाता था वह जो कुछ कमाकर एकट्ठा करता था उसको घर भेजना मुश्किल रहता था या तो खुद पहुँचाये या किसी जान पहचान वाले से पहुँचवाये वह तड़प के रह जाता था उसको अपने घर वालों व बच्चों का रोना याद आता था और कुछ नहीं कर सकता था मगर अब गली गली डाकखाने हैं मनी आर्डर से रूपया आसानी से भेजा जा सकता है और ज़्यादा जल्दी हो तो तार मनी अर्डर से और ज़्यादा जल्दी हो तो नेट मनी आर्डर से भेजा जा सकता है लेकिन आज कमाने वालों के दिलों में घर वालों की तकलीफ और गरीबी का अहसास ही नहीं रह गया है सिनेमा थिऐटर, होटल, रेस्ट्रॉ, रेस, खेल, तमाशों में अपनी कमाई उढ़ा देता है कुछ बचता ही नहीं है कि वह कर भेजे। डाकखाने का तो यह काम है कि अगर कोई रूपया भेजना चाहे तो उसको पहुँचा दे लेकिन अगर कोई भेजना ही न चाहे तो डाकखाना कुछ नहीं कर सकता है। इसका काम अखलाकी का तालीम और नेकी की तरगीब देना नहीं है पहले लोग अपना पेट भरने के लिए मुश्किल से रखते थे और सब घर वालों व गांव के गरीबों में भेज देना चाहते थे मगर आज भेजने और मदद करने के ज़रिये और साधन तो मौजूद हैं लेकिन आदमी के अन्दर गरीबों की मदद का जज़्बा नहीं है और न हमारे मौजूदा कल्चर में इसका ज़िक्र है, अब यह ज़रिये (साधन) कैसे कार आमद हो सकते हैं। यह जज़बात, अच्छी ख्वाहिशात और नेक इरादों की खाना पुरी नहीं कर सकते हैं दुनिया का कौन सा स्कूल इस ख्वाहिश को इंसानों में पैदा कर सकता है और यह ज़रिये (साधन) इसमें क्या मदद कर सकते हैं?

इस काम के लिये अल्लाह तआला ने पैग़म्बरों को तईनात (पदासीन) किया था जो जानते थे कि ज़रिये (साधन – वसायल) से पहले उनसे काम लेने वालों की जरूरत है अल्लाह ने इन्हें ईमान व नूरानी अक्ल व फरासत अता की थी इन्होंने ज़राये पैदा होने से पहले ज़राये से ठीक ठीक काम लेने वाले पैदा किये सवारियों से फायदा उठाने के लिये नेक मकसद से सफर करने वाले पैदा किये, पैसा कमाने से पहले सही तरीकों से खर्च करने वाले पैदा किये, अपनी ताक़त व खुदा की दी हुई नेमतों का इस्तेमाल सिखाया उसके अन्दर अच्छी ख्वाहिशात पैदा की और अच्छी ख्वाहिशात यकीन व अकीदे से पैदा होती है यकीन ख्वाहिश पैदा करता है ख्वाहिश असल का इरादा पैदा करती है और अमल ज़रायों (साधनों) से काम लेता है। ज़राये और इंसानी कोशिशों के नतीजे हमेशा इंसान के इरादे के ताबे (आधीन) रहे नेक ख्वाहिशात इंसानी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी ताकत व दौलत है मगर दुनिया के बड़े बड़े फिलास्फर, डीलर और साइन्सदां इस नुक्ते को समझ नहीं सके। यह सिर्फ खुदा की रह नुमाई और पैग़म्बरों की फरासत थी कि उन्होंने पहले नेक ख्वाहिश पैदा की इंसान को नेक बनने दूसरों से हमदर्दी करने और नेकी को पसन्द करने वाला बनाया ज़राये उनके कदमों के नीचे थे और उनकी ख्वाहिशात के पीछे पीछे उनका ज़हन सही रहबरी से नहीं हटता था वह इंसानों के दिल बनाते थे और दिमाग ढ़ालते थे अल्लाह के पैग़म्बरों ने दुनिया को साइंस नहीं दी इंसान दिए और इंसान ही इस दुनिया का असल है।

पैग़म्बरों ने वह इंसान तय्यार किए जो अपने नफ्स पर काबू रखते थे और ज़राये को अपनी ख्वाहिशात में कम इंसानियत की खिदमत में ज़्यादा लगाते थे इनमें कुछ ऐसे लोग भी थे जो दुनिया का बड़े से बड़ा ऐश कर सकते थे, शाहाना ज़िन्दगी गुज़ार सकते थे मगर उन्होंने ऐसा नहीं

किया बल्कि उन्होंने जोहद व कनाअत (फकीराना) की ज़िन्दगी गुज़ारी। हज़रते उमर र.त.अ. को वह सब हासिल था जिनसे कैसरे रोम और शहंशाह ईरान ऐश की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे और अब हज़रत उमर के कब्ज़े में आ चुके थे ऐशिया व योरोप का ज़्यादा तर हिस्सा उनकी सल्तनत में शामिल था (लगभग 22 लाख वर्ग मील) ऐसा शख्स अगर ऐश करना चाहता तो क्या कमी थी लेकिन हज़रत उमर र.त.अ. ने इस दौलत व वसायल से कोई फायदा नहीं उठाया उनकी सादा ज़िन्दगी का तो यह हाल था कि क़हत के ज़माने में घी का इस्तेमाल छोड़ दिया था और लोग कहने लगे थे कि अगर कहत जल्दी खत्म न हुआ तो उमर र.त.अ. बचते नज़र नहीं आते। उन्हीं के हमनाम (नामराशी) उमर बिन अब्दुल अजीज़ जो बाद में उसी सल्तनत के मालिक थे उनका हाल यह था कि सर्दियों में सरकारी खज़ाने से आम लोगों के नहाने के लिए पानी गर्म किया जाता था उससे नहाना गवारा नहीं था एक रात आप हुकूमत का काम निपटा रहे थे कि एक शख्स मिलने आये दुआ सलाम के बाद वह आपसे आपकी ज़िन्दगी के बारे में बात चीत करने लगे आपने फौरन चिराग गुल कर दिया जिसमें सरकारी खज़ाने का तेल जल रहा था। और बात चीत सरकारी काम से हटकर होने लगी थी। वह उस वक्त की दुनिया की सबसे बड़ी हुकूमत के मालिक थे चाहते तो ऐश ही ऐश करते लेकिन वह जाहिदाना ज़िन्दगी ही गुज़ारते रहे क्योंकि यह अल्लाह के आखिरी नबी रसूलुल्लाह स.अ.व. की तालीम थी।

दोस्तों और भाईयों पश्चिम की आज सबसे बड़ी कमज़ोरी और बेबसी है कि उसके पास वसायल और ज़रिये तो बेशुमार है लेकिन ख्वाहिशात और नेक इरादों से उनके दिल खाली हैं वह अगर माद्दी (भौतिक) तरक्की में कारून है तो नेक मकासिद में मुफलिस और कल्लास हैं उन्होंने कायनात के छुपे हुये राज खोले और अपना गुलाम बनाया समन्दरों और फजाओं (अंतरिक्ष) पर अपनी हुकूमत कायम की लेकिन अपनी ख्वाहिशात और नफ्स (महत्वाकाक्षाओं) पर काबू नहीं कर पाया उसने कायनात के उलझे हुये मामलात हल किये लेकिन अपनी ज़िन्दगी की पहेली न बूझ सका, उसने बिखरी हुई लडियों और छुपी हुई ताकतों में आला निजाम कायम किया उसने माद्दी (भौतिक) ज़िन्दगी में इनकलाब पैदा कर दिया लेकिन वह अपनी ज़िन्दगी का इन्तशार (बिखराव) न दूर कर सका।

जहन की कजी और नियत की खराबी ने इन वसायल को इंसानियत के लिये हद दरजे खतरनाक (बुद्धि की खोट) बना दिया है अगर बेरहम ज़ालिम शख्स तेज छुरी है तो वह ज़्यादा नुकसान पहुँचायेगा और अगर छुरी मोथरी है तो कम नुकसान पहुँचायेगा, टेक्नालाजी ने तरक्की की लेकिन सीरत (चरित्र) ने तरक्की नहीं की जिसका नतीजा है कि नये वसायल इन्सानियत के लिए अजाब बन गये तेज रफ्तार सवारियों ने जुल्म की रफ्तार तेज कर दी पहले ज़ालिम बैलगाड़ियों में बैठकर जाते थे और जुल्म करते थे लेकिन पहुँचने में जितनी देर होती थी जुल्म में उतनी ही देर लगती थी और मजलूम को कुछ दिन तो सांस लेने और आराम करने का मौका मिल जाता था ज़माने ने तरक्की की और नये ज़माने के ज़ालिम तेज रफ्तार सवारियों पर बैठकर दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक आसानी से पहुँच जाते हैं और कमज़ोरों को दबोचकर फना कर देते हैं।

आज दुनिया के बड़े बड़े फिलासफर व मुफक्किर (विचारक) यह मानने पर मजबूर हो रहे हैं कि दुनिया ने वसायल पैदा किये मगर मकासिद नहीं दिए और वसायल बगैर मकासिद के बेकार हैं आज हम पश्चिम से यह कहने पर मजबूर हैं कि

तुम्हारी तरक्की और ईजाद (खोज) नाकिस हैं तुम्हारी तहज़ीब तुम्हारा फलसफा और तुम्हारी तरक्कियॉ अच्छे मकासिद और नेक ख्वाहिशात पैदा करने में नाकाम हैं तुम यह तो कर सकते हो कि अच्छे से अच्छे काम के ज़राये पैदा कर दो मगर अच्छे काम का रूझान पैदा नहीं कर सकते हो रूझान का ताल्लुक दिल से है और तुम्हारे वसायल और ईजादात की दिल तक रसाई नहीं है और जब तक अच्छे काम का रूझान न हो ज़राये वसीले कुछ नहीं कर सकते अच्छे काम का रूझान और उसकी शिद्दत पैदा करना पैग़म्बरों का काम था और उन्हीं की तालीम अब भी इसका वाहिद (एक मात्र) ज़रिया है उन्होंने इसको बड़े पैमाने पर पैदा करके दिखा दिया। लाखों लोगों के दिल में नेक काम की ख्वाहिश, खिदमत का जज़्बा और जुल्म व बदी से नफरत पैदा कर दी और उन्होंने अपने महदूद ज़राये से वह काम करके दिखाये जो आज तरक्की शुदा ज़राये से नहीं हो पा रहे हे। फिर भी लोग कहते हैं कि मज़हब के पास कोई पैग़ाम नहीं है और इस दौर में मज़हब कुछ कर नहीं सकता है। मगर मैं इस बात को काटते हुए चैलेंज करता हूँ कि मज़हब आज भी दुनिया की रहनुमाई कर सकता है सही और ताकतवर मज़हब ही नेकी का रूझान और नेक अमल की ख्वाहिश पूरी करता है और यही ज़िन्दगी की कुंजी है आज दुनिया सख्त इन्तशार (बिखराव) में फंसी है पश्चिम के पास वसायल हैं लेकिन मकासिद नहीं और इन दोनों का जोड़ हो जाये तो दुनिया का नक्शा ही बदल जाये। आज दुनिया में वसायल इतने ज़्यादा हैं कि उनसे काम लेने वाले मैदान नहीं हैं और तरक्कीयाफ्ता लोग मंडियॉ तलाश रहे हैं और आजाद कौमों और मुल्कों को अपनी मंड़ी बनाने पर आमादा रहते हैं यहॉ तक कि जंग की ज़रूरत भी पड़ जाती है ताकि नये पुराने असलहे ठिकाने लग सकें।

हम लोगों (पूर्ववाले) का फर्ज था कि योरोप (पश्चिम) की माल की मंड़ी बनने के बजाये और उनके ज़राये व वसायल की नुकताचीनी के बजाये उनकी मदद करते उनको अखलाक (नैतिकता) का सबक देते उनमें ईमान ओर यकीन की रोशनी और बुलन्द किरदारी का रूझान पैदा करने की कोशिश करते जिनसे पश्चिम के लोग सदियों पहले से महरूम हैं लेकिन आज अफसोस इस बात का है कि आज हम खुद अखलाकी रूझान और इंसानी सिफात में दीवालिया होते जा रहे हैं बल्कि पश्चिम में फैली खुदगर्जी खुदफरामोशी और दौलत इकट्ठा करने के जुनून जैसी बीमारियों के शिकार होते जा रहे हैं और सबसे ज़्यादा खतरनाक बात यह है कि कोई भी शख्स, जमाअत या इदारा (संस्था) अखलाकी इस्लाह, ईमान व यकीन की तबलीग और सीरत (चरित्र) बनाने का काम अन्जाम नहीं दे रहा है हालांकि यह काम हर काम से ज़्यादा अहम और ज़रूरी है।

कहने और करने की बात यही है कि पैग़म्बरों का रास्ता अपनाया जाये, खुदा के वुजूद और मरने के बाद की ज़िन्दगी का यकीन पैदा किया जाये और ज़िन्दगी में खुदा की फरमा बरदारी अख्तियार की जाये तभी अपने आपको और तमाम इंसानियत को सर पर मंडला रहे भयानक खतरों से बचाया जा सकता है।

चार चीज़ें चार चीज़ों की दुश्मन

१. ईमान का दुश्मन झूठ है।
२. अक्ल का दुश्मन गुस्सा है।
३. इज़्ज़त का दुश्मन सवाल (मांगना) है।
४. दौलत की दुश्मन बद दियानती है।

ईमान तब ही मजबूत होता है जब बाकी तीनों को ध्यान में रखकर सामने वाले के साथ पेश आया जाये।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के उपदेश

(अनुवादित)

गौर करो, उसने तुम्हें हर चीज़ के मांगने की इजाज़त देकर (जो जायज़ है) अपनी रहमत की कुंजियाॅ तुम्हारे हवाले कर दी हैं तुम जब चाहो दुआ करके उसकी रहमतों के दरवाजे खुल वालो, रहमतों का पानी बरस वालो,लेकिन कुछ कुबूल होने में देर हो तो मायूस न हो जाओ क्योंकि कुबूले दुआ का मदार नियत पर है कभी दुआ कुबूल होने में देरी इसलिये होती है कि मांगने वाले को ज़्यादा सवाब मिले और ज़्यादा बख्शिश दी जाये, कभी ऐसा भी होता है कि तुम जो मांगोगे वह नहीं मिलेगा लेकिन जल्द या देर उससे बेहतर चीज़ तुम्हें देदी जाये या फिर वह चीज़ तुम्हारे लिये बेहतर न हो क्योंकि अक्सर मुरादें ऐसी होती हैं कि जिन्हें तुम तलब करते हो कि अगर वह पूरी कर दी जायें तो तुम्हारा दीन बरबाद हो जाये बस तुम्हारी दुआ उन्हीं बातों के लिये होनी चाहिए जो तुम्हारे लिए फायदे मंद हों और जो उनके नुकसानात हों वह तुम से दूर रहें। माल व दौलत बड़ी चीज़ नहीं है माल तुम्हारे लिए है तुम माल के लिये नहीं हो।

समझलो कि तुम आखिरत के लिए पैदा हुए हो न कि दुनिया के लिए, फना होने के लिए बनाये गये न कि बाकी रहने के लिए तुम मौत के लिए बनाये गये हो न कि ज़िन्दगी के लिए तुम ऐसी जगह पर हो जो डांवा डोल है यह महज आखिरत की तय्यारी करने की जगह है मौत तुम्हारा इस तरह पीछा कर रही है कि लाख तुम भागो लेकिन उससे बच नहीं सकते और मौत से कोई बच नहीं सकता मौत अपना शिकार ढूंढ़ ही लेती है एक न एक दिन तुम्हें मौत का शिकार होना ही है लिहाज़ा होशियार रहो कि मौत ऐसी हालत में न आजाये कि तुम किसी बुरी हालत में हो तुम तौबा की फिक्र में लगे हो और मौत रास्ता रोक कर बीच में खड़ी हो जाये अगर ऐसा हुआ तो तुमने अपने आपको हिलाक कर डाला।

मेरे बेटे! मौत पर अपने अमल पर और मौत के बाद की हालत पर हमेशा तुम्हारा ध्यान रहे ताकि जब उसका पयाम पहॅुचे तो तुम इस हाल में हो कि होशियार थे उसकी आमद की तय्यारी कर चुके थे और मौत तुम्हारे पास इस तरह आये कि तुम उसकी आमद से परेशान न हो जाओ और तुम्हें अचानक उस पयाम को सुनना न पड़ें।

दुनियादारों की महबूबियत और उसकी तलब से उनकी मुसावकत से तुम खुद को बचाओ खुदा ने दुनिया की हकीकत खोलदी है खुद दुनिया ने भी अपने फानी होने का एलान कर दिया है अपनी बुराइयों से नकाब उठा दिया है दुनियादार तो भौंकने वाले कुत्ते और फाड़ खाने वाले दरिन्दे हैं जो एक दूसरे पर गुर्राते हैं जहाॅ ताकतवर कमज़ोर को खा जाते हैं जहाॅ बड़े छोटे को हजम कर जाते हैं उनमें कुछ तो बंधे हुए ऊॅट हैं जो नुकसान नहीं कर सकते हैं और कुछ छूटे हुए ऊॅट हैं जो हर तरह का नुकसान करते फिरते हैं उनकी अक्ल गुम हैं वह अन्जान रास्तों पर पड़े हुए हैं और दुख भरी वादियों में बलायें और आफतें

चरने के लिये छोड़ दिये गये हैं जहॉ उन्हें कोई देखने वाला नहीं है दुनिया उन्हें अंधेरों रास्तों में ले गई है और रोशनी के मीनार उन्हें दिखाई नहीं देते हैं बस वह दुनिया की भूल भुलय्या में फंस गये हैं और उसकी लज्जतों में डूब गये हैं और उन्होंने दुनिया ही को अपना परवरदिगार बना लिया है पस वह उनके साथ खेल रही है और वह उसके साथ खेल रहे हैं और अफसोस कि उन्होंने आने वाली ज़िन्दगी को बिल्कुल भुला दिया है वहुत जल्द अंधेरा छट जायेगा और काफिला मंज़िल पर पहॅुच जायेगा जो रात दिन की गाड़ी पर सवार बराबर चलता चला जा रहा है।

समझलो तुम अपनी सब उम्मीदों में कामयाब नहीं हो सकते हो ज़िन्दगी से ज़्यादा जी नहीं सकते हो तुम भी उसी राह पर चले जा रहे हो जिसपर तुमसे पहले लोग जा चुके हैं लिहाज़ा अपनी तलब में एतदाल (बीच का रास्ता) मद्दे नज़र रखो अपनी कमाई में हद से आगे न बढ़ो याद रखो! कोई तलब ऐसी भी होती है जो जंग की तरफ ले जाती है न हर मांगने वाले को मिलता है और न कोई खुद्दार महरूम रहता है हर किस्म की जिल्लत से अपने आपको बचालो चाहे वह कैसी ही मनचाही ज़िन्दगी की तरफ ले जाने वाली हो क्योंकि इज़्ज़त का बदला तुम्हें कभी मिल ही नहीं सकता और तुम दूसरों के गुलाम न बनों क्योंकि खुदा ने तुम्हें आजाद पैदा किया है वह भलाई भलाई नहीं है जो बुराई से आये और वह दौलत दौलत नहीं है जो ज़िल्लत की राह से मिले।

खबरदार! तुम्हें हिर्स व हवस हिलाकत के घाट पर न ले जाये जहॉ तक मुमकिन हो अपने और खुदा के दरमियान किसी के एहसान को न आने दो तुम्हें तुम्हारा हिस्सा बहरहाल मिलकर रहेगा खुदा का दिया हुआ थोड़ा, मखलूक के दिये हुये बहुत से, कहीं ज़्यादा और बेहतर है अगरचे मखलूक के पास भी जो कुछ है वह सब कुछ भी खुदा का दिया हुआ है।

खामोशी की वजह से जो खराबी पैदा होती है उसका तदारूक आसान है मगर गुफ्तगू से जो खराबी पैदा होती है उसका तदारूक मुश्किल है क्या तुमने नहीं देखा कि मशक का मुॅह बॉध कर ही पानी रोका जाता है अपना माल न खर्च करना दूसरे के सामने हाथ फैलाने से कहीं अच्छा है मायूसी की तलखी सवाल करने से बेहतर है और इज़्ज़त के साथ मेहनत व हुनर से रोज़ी पैदा करना गुनाहों से हासिल होने वाली रोज़ी से कहीं बेहतर है। आदमी अपना राज खुद ही खूब छुपा सकता है लेकिन कभी अपने पांव पर खुद ही कुल्हाड़ी मारलेता है जो ज़्यादा बोलता है ज़्यादा गल्ती करता है और जो गौर व फिक्र करता है वह हकीकत पा लेता है।

नेकों की सोहबत में रहोगे नेक हो जाओगे, बुरे लोगों की सोहबत से बचोगे तो बुराई से दूर रहोगे, हराम खाना बदतरीन खाना है और कमजोरों पर जुल्म करना सबसे बड़ा जुर्म है जब नर्मी सख्ती बन जाये तो सख्ती नर्मी बन जाती है कभी दवा बीमारी हो जाती है कभी बीमारी दवा। कभी बदख्वाह खैरख्वाह बन जाता है और खैरख्वाह बदख्वाही कर जाता है देखो ख्याली उम्मीदों पर तकिया न करो यह मर्दों का सरमाया है तजुर्बे याद रखने का नाम अकल है और बहतरीन तजुर्वा वह है जो तुम्हें कुछ समझा जाये। मौके से फायदा उठाओ इससे पहले कि वह तुम्हारे खिलाफ हो जाये हर कोशिश करने वाला कामयाब नहीं होता है और हर जाने वाला वापस नहीं आता है माल बरबाद करना और आखिरत का बिगाड़ना जुर्मे अजीम है हर चीज़ की किस्मत मुकद्दर हो चुकी है जो तुम्हारी तकदीर में लिखा है वह सामने आ ही जायेगा ताज़र (व्यापारी) खतरात में घिरा रहता है कभी किल्लत में कसरत से ज़्यादा बरकत होती है। तौहीन करने वाले मददगार और सूऐजन

रखने वाले दोस्त में ज़रा सी भी भलाई नहीं होती है जब तक ज़माना साथ दे ज़माने का साथ दो। दोस्त दोस्ती तोड़ने लगे तो तुम उसे हुस्ने सुलूक के साथ जोड़ दो वह दूरी अख्तियार करे तो तुम महेरबानी के साथ उसके करीब हो जाओ, वह सख्ती करे तुम नर्मी करो वह गल्ती करे तो तुम उसके लिए बहाने तलाश करो दोस्त के साथ ऐसा बर्ताव करो कि गोया तुम गुलाम हो और वह आका है लेकिन खबरदार यह बर्ताव बे बुनियाद न हो, नाअहल के साथ न हो, दोस्त के दुश्मन को अपना दोस्त न बनाओ वरना दोस्त भी दुश्मन बन जायेगा, दोस्त को बेलाग नसीहत करो वह नसीहत उसे अच्छी लगे या बुरी लगे, गुस्से को जब्त किया करो, क्योंकि अंजाम के एतबार से गुस्से के जाम से ज़्यादा लजीज़ और मीठा कोई जाम नहीं जो तुमसे सख्ती करे तुम उससे नर्मी करो तो वह खुद बखुद नर्म हो जायेगा और अगर दोस्त से दोस्ती तोड़ना ज़रूरी हो तो भी अपनी तरफ से ज़रूर कुछ न कुछ लगाव बाकी रखो ताकि जब चाहो दोस्ती जोड़ सको और अपने दुश्मन पर एहसान व करम करो क्योंकि वह दो कामियाबियों में से एक कामयाबी है।

जो तुम से हुस्ने जन रखे उसके हुस्ने जन को झूठा न होने दो। दोस्त के हक इस घमंड में न दबाओ कि वह तो दोस्त है क्योंकि जिस दोस्त के हक दबा लिये जाते हैं वह दोस्त नहीं रहता। और तुम ऐसे न हो जाओ कि तुम्हारा खानदान ही तुम्हारे हाथों सब से ज़्यादा बदख्वाह बन जाये। जो कोई बेपरवाही जाहिर करे उसकी तरफ न झुको दोस्त दोस्ती तोड़ने में और और दोस्ती जोड़ने में बराबर न रहो तुम्हारा पल्ला हमेशा भारी रहना चाहिए और नेकी से ज़्यादा बदी में तेज न हो जाओ और ज़ालिम के जुल्म से तंगदिल न हो जाओ क्योंकि वह खुद अपना नुकसान और तुम्हारा फायदा कर रहा है और जो तुम्हें खुश करे उसका सिला यह नहीं कि तुम उसे रंज पहुँचाओ।

मेरे बेटे समझ लो कि रिज़्क दो किस्म का होता है एक वह रिज़्क है जिसको तुम तलाशते हो और दुसरा वह रिज़्क हैं जो तुम्हें तलाशता है पस अगर तुम जुस्तजू छोड़ दो तो रिज़्क खुद बखुद तुम्हारे पास आ जायेगा दुनिया में तुम्हारा हिस्सा बस इतना ही है जितने से तुम अपनी आकिबत दुरूस्त कर सको अगर तुम उस चीज़ पर रंज करो जो तुम्हारे हाथ में नहीं आई है। आयन्दा को गुजिस्ता (गुज़रे हुये) से गैर समझो क्योंकि यह हालत दूसरी हालत से मिलती जुलती है, उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन पर नसीहत नहीं मलामत असर करती है दाना आदमी मामूली दबाव से मान जाता है मगर चौपाया सिर्फ मारने से बाज आता है ख्वाहिशों और दिल के वसवसों को सब्र व यकीन के ज़रिया दूर कर दो। जो कोई राहे एतदाल (सीधी डगर) से इधर उधर हो जाता है गुमराह हो जाता है दोस्त रिश्तेदार की तरह है और सच्चा दोस्त वही है जो पीठ पीछे दोस्ती का हक अदा करे और नफ्स की ख्वाहिशों और बदवख्तियों में साझा है और कितने गैर हैं जो अपनों से ज़्यादा अजीज़ हैं परदेशी वह है जिसका कोई दोस्त नहीं है।

जिसने राहे हक छोड़ दी उसका रास्ता तंग हो जाता है और जो अपनी हैसियत पर रहता है उसकी इज़्ज़त बाकी रहती है सबसे ज़्यादा मज़बूत ताल्लुक वह है जो बन्दे और खुदा के बीच होता है जो कोई तुम्हारी परवाह नहीं करता है वह तुम्हारा दुश्मन है जब उम्मीद में मौत हो तो नाउम्मीदी ज़िन्दगी बन जाती है न हर ऐब ज़ाहिर होता है और न हर मौके से फायदा उठाया जा सकता है कभी ऑखों वाला ठोकर खा जाता है और कभी अंधा सीधी राह चला जाता है बदी को अपने से दूर रखो क्योंकि जब उसे चाहोगे वह तुम्हें मिल सकती है बेवकूफ से दोस्ती काटना अक्लमंद

से दोस्ती जोड़ने के बराबर है।

जो दुनिया पर भरोसा करता है दुनिया उससे बेवफाई कर जाती है और जो दुनिया को बढ़ाता है दुनिया उसे गिरा देती है हर तीर निशाने पर नहीं बैठता है, जब हाकिम बदलता है ज़माना भी बदल जाता है सफर से पहले सफर के साथियों को देख लो और ठहरने से पहले पड़ोसियों की जांच कर लो।

खबरदार तुम्हारी बातचीत में हंसाने वाली कोई बात न हो चाहें तुम किसी की कही हुयी बात ही बयान कर रहे हो।

खबरदार औरतों से मशवरा न करना क्योंकि उनकी अक्ल कमज़ोर होती है और उनका इरादा कमज़ोर होता है, पर्दे में बिठाकर उनकी निगाहों की हिफाज़त करो क्योंकि सख्त पर्दा उनकी इज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त के लिए ज़रूरी है, बद अतवार (बुरे चरित्र) लोगों का उनके बीच आना जाना उनके बे परदा रहने से ज़्यादा खतरनाक है जहॉ तक मुमकिन हो उन्हें गैरों से कोई मतलब न रहने दो और औरत को उसकी ज़ात के सिवा और किसी बात में खुदमुख्तार (आजाद) न होने दो क्योंकि औरत फूल है जल्लाद नहीं है सिर्फ उसकी ज़ात तक उसकी इज़्ज़त करो, औरत को लोगों की सिफारिश करने का आदी न बनाओ देखो! बेजा रकाबत (कुर्बत) ज़ाहिर न करो क्योंकि इससे पाकदामन और बेलाग औरत की भी बुराई की तरफ रह नुमाई होती है और आबरूदार औरत भी गुनाह की तरफ चलने लगती है।

अपने गुलामों (नौकरों) में से हर एक के जिम्मे कोई न कोई काम रखो ताकि वह तुम्हारी खिदमत को एक दुसरे पर न टालें और अपने खानदान की इज़्ज़त करो क्योंकि वह तुम्हारे बाजू हैं जिनसे तुम उड़ते हो, बुनियाद है जिस पर तुम ठहरते हो, हाथ है जिससे तुम लड़ते हो।

दुनिया की मिसाल सॉप की सी है जिसकी खाल तो नर्म होती है मगर उसका ज़हर जान ले लेता है पस दुनिया की जो चीज़ तुम्हें अच्छी लगे उससे बचो क्योंकि वह कम ही तुम्हारा साथ देंगी अपने दिल से दुनिया की तलब को दूर रखो क्योंकि तुम्हें इसकी जुदाई का यकीन है जब दुनिया से मुहब्बत बहुत हो उसी वक्त इससे होशियार रहो क्योंकि दुनिया का तरीका यही है कि जब आदमी उसकी किसी खुशी में फंस जाता है तो खुशी छीन कर उससे महरूमी से दो चार कर देती है या किसी प्यार व मुहब्बत की तरफ दुनिया किसी को मायल कर देती है तो फौरन ही उसे वहशत व नफरत की तरफ ले जाती है।

मैं तुम्हें दुनिया व आखिरत में खुदा के सुपुर्द करता हूँ और मैं हर दौर और हर मुकाम में उस जाते बरतर (अल्लाह तआला) से तुम्हारे लिए फलाह व बहबूद (कामयाबी व कामरानी) की दुआ करता हूँ। वस्सलाम।

क्या आप जानते हैं?

1.ज़मीन से सूरज की दूरी 9 करोड़ 30 लाख मील।
2.सूरज का कतर (व्यास - डायमीटर) 8 लाख 64 हज़ार मील।
3.सूरज की रोशनी ज़मीन तक 8 मिनट में पहुँचती है।
4.ज़मीन से चाँद की दूरी 2 लाख 38 हज़ार 857 मील।
5.चाँद का कतर (व्यास - डायमीटर) 2160 मील।
6.ज़मीन का कतर (व्यास-डायमीटर) 8 हज़ार मील।
7.ज़मीन की मुहीत (परिधि) 25 हज़ार मील।
8.ज़मीन सूरज का एक चक्कर 365 दिन 6 घंटे में लगाती है।
9.चाँद ज़मीन का चक्कर 29 दिन 12 घंटे में लगाता है।
10.ज़मीन अपनी केन्द्र (धुरी पर) 24 घंटे में चक्कर पूरा करती है।
11.ज़मीन के उत्तरी भाग में सबसे बड़ा दिन 21 जून।
12.इसी भाग में सबसे छोटा दिन 22 दिसम्बर है।
13.इसी भाग में रात दिन बराबर होते हैं 21 मार्च 23 सितम्बर को।
14.पूरे साल रात दिन बराबर होते हैं भूमध्य रेखा पर।

नमाज़ी बनो और बनाओ नमाज़ी

डा0 नूरूल हसन

इस दुनिया में बसने वाले इंसानों में अल्लाह की इबादत के तरह तरह के तरीके पाये जाते हैं लेकिन जो इबादत का तरीका इस्लाम ने बतलाया है वह अपने आप में मुकम्मल भी है और बेमिसाल भी है। मुसलमान रोज़ाना मुहल्ले पड़ोस की मस्जिद में पॉच बार और हफ्ते में एक दिन जुमे को दोपहर की नमाज़ एक जगह इकट्ठे हो कर जामा मस्जिद में अदा करते हैं और जुमे के दिन अल्लाह तआला व रसूलुल्लाह स.अ.व. ने बहुत एहतमाम की ताकीद फरमाई है लेकिन निहायत ही अफसोस है कि मुसलमान जुमे के दिन की अजमत व बुजुर्गी का एहसास ही नहीं करते आज भी अगर मुसलमान जुमे के दिन की अजमत के हिसाब से एहतमाम व इन्तज़ाम करलें तो उनकी ज़िन्दगी की हज़ारों खराबियॉ दूर हो सकती हैं और जुमे के ज़रिये से उम्मत में बेहतरीन तन्जीम (संगठन) पैदा की जा सकती है। जुमे की नमाज़ तमाम लोगों पर फर्ज है सिर्फ चार लोगों पर फर्ज नहीं है, 1. दीवाना (पागल) 2. बीमार 3. नाबालिग 4. औरत।

अगर शहर के मुसलमान और आस पास के देहात के लोग एहतमाम के साथ शहर के जामा मस्जिद में जुमे की नमाज़ अदा करें तो अज़ीमुश्शान भीड़ से बहुत फायदा मिल सकता है। देहात के जो लोग शहर में आकर नमाज़ पढ़ने के बाद अपने घर उसी दिन वापस पहॅुच सकते हैं उनको नमाज़े जुमा शहर की जामा मस्जिद में पढ़ना निहायत ज़रूरी है। शहर की जामा मस्जिद का इमाम भी आरिफ बिल्लाह आलिम होना चाहिए जो मुसलमानों को दीनी व दुनियाबी रहनुमाई कर सके और जुमे से पहले कुरआन व हदीस से अच्छी व नेकी की बातों की तलक़ीन करे। जिसको सुनकर मुसलमान खुद भी अमल करने वाले बने और घरों में जा कर उन्ही बातों की तरगीब घर वालों को दें तो यकीनन जुमे के इस इज़्तमा से मुसलमानों की मौजूदा तमाम खराबियों का इलाज हो सकता है और इस लगातार तबलीग के ज़रिये मुसलमानों में आम बेदारी भी पैदा हो सकती है।

इर्शादाते रसूल (सल्ल0) से मालूम होता है कि नमाज़े जुमा बहुत ही ज़रूरी है और पूरी शान व शौकत के साथ अदा करना हर आकिल व बालिग मर्द मुसलमान पर फर्ज है बस जो शख्स जुमे के दिन अच्छी तरह नहाये, साफ सूथरे कपड़े पहने खुश्बू लगाये और जामा मस्जिद में जाकर पूरे खुलूस से नमाज़ अदा करे तो अल्लाह तआला उसके अगले जुमे तक के सगीरा (छोटे) गुनाहों को माफ कर देगा और जो सुस्ती और काहिली की वजह से जुमे की नमाज़ छोड़ देगा तो उसकी गिनती मुनाफिकों (झूठे मुसलमान) में होगी एक हदीस में है कि "लोग जुमे की नमाज़ तर्क करने से बाज आ जाये वरना याद रखे अल्लाह तआला उनके दिलों पर मुहर लगा देगा और उनकी गिनती गाफिलों में कर दी जायेगी। हर वह मुसलमान जो जान बूझकर तीन जुमे तर्क कर देता है उसके दिल पर मुहर लग जाती है अगर तुममें से किसी की नमाज़े जुमा किसी वजह से छूट जाये तो आधा या एक दीनार सदका कर दें जिससे खुदा का गुस्सा ठंडा होता है।

एक हदीस में आप (सल्ल0) ने फरमाया है कि ''जी चाहता है कि किसी इमाम को मुकर्रर करूँ और खुद मुहल्ले में जाऊँ और जो लोग जुमे की नमाज़ में शामिल नहीं हुये हैं उनके घरों को आग लगा दूँ''इस हदीसे रसूल से नमाज़ जुमा की अहमियत ज़ाहिर होती है। अल्लाह तआला कुरआने मुकद्दस के अट्ठाइसवें पारे की सूरा जुमा के दूसरे रूकू में इर्शाद फरमाता है कि ''ऐ ईमान वालो जुमे के लिए जब पुकारा जाये तो खरीद व फरोख्त छोड़कर मस्जिद की तरफ रवाना हों जाओ इसी में तुम्हारी भलाई है अगर तुम कुछ समझ सकते हो और जब नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह का फज़ल और रोज़ी तलाशने के लिए ज़मीन में इधर उधर फैल जाओ और अल्लाह का रिज़क ज़्यादा से ज़्यादा तलाश करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ। और जब यह लोग कहीं तफरीह व तिजारत देख लेते हैं तो आपको छोड़कर उसकी तरफ दौड़े चले जाते हैं इनसे फरमा दीजिए कि जो चीज़ अल्लाह के यहॉ है वह तफरीह व तिजारत से बेहतर है और अल्लाह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है'' ।

इन आयतों का मतलब यह है कि यह ख्याल मत करो हमने जुमे की नमाज़ अच्छी तरह से पढ़ी खुत्वा सुना तो तिजारत में नुकसान हो जायेगा बल्कि पक्का यकीन रखो कि राज़िक (रिज़्क देने वाला) अल्लाह है जो हर हाल में रिज़्क पहुॅचाता है यहॉ तक कि देखने में आता है कि जो जानदार अपनी जगह से हिल भी नहीं सकते उन्हें भी रिज़्क खुदा पहुॅचाता है। थोड़ा सा वक्त नमाज़ जुमा में लगाने से इंसान खसारे में नहीं रह सकता बल्कि इबादत करने और शुक्रिया अदा करने से अल्लाह नेमतों को और बढ़ा देता है।

नमाज़े जुमा का एहतमामः— जुमे की पहली अज़ान सुनतेही मस्जिद की तरफचल देना चाहिए और अगर अज़ान से पहले पहुॅच जाये और भी बेहतर है। अजान हो जाने के बाद खरीद व फरोख्त या कोई दूसरा काम करना बिल्कुल हराम है। मस्जिद के दरवाज़े पर फरिश्ते खड़े होते हैं और आने वालों के नाम लिखना शुरू करते हैं जो सबसे पहले आता है उसको ऊॅट की कुर्बानी का सवाब मिलता है और उसके बाद दाखिल होने वाले को गाय का फिर बकरी का फिर उसके बाद वाले को मुर्गी का और उसके बाद वाले को मुर्गी के अण्डे को अल्लाह की राह पे खर्च करने का सवाब मिलता है और जब इमाम खुत्बे के लिए मिम्बर पर बैठ जाता है तो फरिश्ते लिखना बन्द कर देते हैं और खुत्बा सुनने लगते हैं। खुत्बे का सुनना भी उतना ही ज़रूरी है जितना नमाज़ का अदा करना और खुत्बे का पूरा सवाब उसी सूरत में मिलता है कि पूरा खुत्बा सुना जाये, जो लोग खुत्बा नहीं सुनते या जान बूझकर देर में जाते हैं बहुत ही बुरा करते हैं।

जुमे को साफ व पाकीजा कपड़े अच्छी तरह गुस्ल करके पहनना चाहिए और बालों में तेल व कंघा करना खुश्बू लगाना सुन्नत है।

जुमे की नमाज़ में जब जाये तो जहॉ कहीं जगह मिले वहीं बैठ जाना चाहिए सफों को चीर कर औरों के कंधों पर से कूदते हुये अगली सफ में जाते हैं या किसी दूसरे नमाज़ी को हटाकर, उसकी जगह पर बैठ जाते हैं जो लोग ऐसा करते हैं उन्हें इससे बचना चाहिए क्योंकि हुज़ूरे अकरम स.अ.व. ने फरमाया है कि दूसरों के कंधों से कूदकर निकलने वालों को क्यों न पुलसरात यानी जहन्नुम का पुल बना दिया जाये।

खुत्बा इत्मीनान व सुकून के साथ सुनना चहिए और किसी तरह की बात नहीं करनी चाहिए अगर बहुत ज़रूरी न हो तो हाथ या ऑख से इशारा भी नहीं करना चाहिए।

जुमे का दिन बहुत अजमत वाला है इसी दिन सब इंसानों के बाप .... शेष पेज 27 पर ......

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का खानदान

मौलाना शरीफ़ अहमद क़ासमी

आप (सल्ल0) के नाना नानी के नामः– नाना का नाम वहब और नानी का नाम बर्रह था (इब्ने हिशाम)।

परनाना परनानी के नामः– परनाना का नाम अबदुलउज्ज़ा और परनानी का नाम उम्मे हबीब था (इब्ने हिशाम)।

मॉमू का नामः– हज़रत सअद बिन अबी वक़ास (रज़ि0) मॉमू थे मगर सगे न थे (असदुल ग़ाबा, इब्ने असीर)।

ख़ाला का नामः– हालह बिन्त आहेब आपकी रिश्ते में खाला थीं मगर सगी न थीं, और हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 की वालदा थीं, (सीरतुन्न नबी–अल्लामा शिबली नेमानी, नबीये रहमत–अली मियां नदवी)।

दूध पिलाने वाली औरतों के नामः–

1. हज़रत आमिना आपकी मॉ।
2. सोबिया अबूलहेब की लौंडी।
3. हज़रत हलीमा सादिया (तबकात इब्ने सअद)।

रज़ाई वालिद का नामः– यानी दूध के रिश्ते से बाप – हारिस बिन अब्दुल उज्ज़ा कुन्नियत अबू कबशा थी, (तबकात इब्ने सअद)।

रज़ाई बहनों के नामः–

1. अनीसा।
2. हुज़ैफा।
3. खुज़ाफा(शैमा के नाम से मशहूर थीं और इस्लाम ले आईं थीं) – (सीरतुन्नबी)।

रज़ाई भाईयों के नामः–

1. अबदुल्लाह बिन हारिस बिन अबदुल उज्ज़ा।
2. हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 रिश्ते में आप के चचा थे।
3. मुग़ीरा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब कुन्नियत अबू सुफ़ियान रिश्ते में चचाज़ाद भाई थे।
4. मसरूह सोबिया के लड़के थे।
5. हज़रत अबू सलमा, असली नाम अब्दुल असद था,जो आपकी फूफ़ी के लड़के थे, (रहमतुल्ललिल आलमीन – सुलेमान मंसूरपुरी)।

अज़वाज़े मुतहरात (बीवियों) के नामः–

1. हज़रत खदीज़ा रजि. कुन्नियत उम्मे हिन्द और लक़ब ताहिरा था।
2. हज़रत सौदा रज़ि0।
3. हज़रत आयशा, कुन्नियत उम्मे अब्दुलाह और लक़ब सिद्दीक़ा था।
4. हज़रत हफसा रज़ि0।
5. हज़रत ज़ैनब रज़ि0, बिनते खुज़ैमा रज़ि0 कुन्नियत उम्मुल मसाकीन।
6. हज़रत हिन्द रज़ि0, कुन्नियत उम्मे सलमा।
7. हज़रत ज़ैनब रज़ि0, बिनते जहश रज़ि0 कुन्नियत उम्मे हकम।
8. हज़रत जुबैरिया रज़ि0।
9. हज़रत रमला, कुन्नियत उम्मे हबीबा रज़ि0।
10. हज़रत मैमूना रज़ि0।
11. हज़रत सफिया रज़ि0 (इब्ने कसीर)।

कनीज़ों के नामः–

1. हज़रत मारिया किबतिया।
2. हज़रत रिहाना।
3. हजरत नफ़ीसा (सीरते मुस्तफा – इदरीस कांधलवी)।

खुसरों(ससुर) के नामः–

1. ख्वैल्द वालिद हज़रते खदीजा रज़ि0।
2. जुमआ वालिद हज़रते सौदा रज़ि0।
3. हज़रत अब्दुल्लाह कुन्नियत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि0 वालिद हज़रते आयशा रज़ि0।

4. खुज़ैमा वालिद ज़ैनब उम्मुल मसाकीन रज़ि0।
5. सुहैल वालिद उम्मे सलमा रज़ि0।
6. जहश वालिद ज़ैनब रज़ि0।
7. हारिस वालिद हज़रत जुबैरिया रज़ि0।
8. सख्र जो अबू सुफ़ियान के नाम से मशहूर थे, वालिद उम्मे हबीबा रज़ि0।
9. हारिस वालिद हज़रते मैमूना रज़ि0।
10. हुअई बिन अख़तब वालिद हज़रते सफीया रज़ि0।
11. हज़रत उमर फारूक रज़ि0 वालिद हज़रते हफसा रज़ि0।(सीरतुन्नबी—शिबली नोमानी)

सासों के नामः—

1. फातिमा वालिदा हज़रते खदीज़ा रज़ि0।
2. शमूसी वालिदा हज़रत सौदा रज़ि0।
3. ज़ैनब कुन्नियत उम्मे रोमान वालिदा हज़रते आयशा रज़ि0।
4. ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन वालिदा हज़रते हफसा रज़ि0।
5. हिन्द बिन्ते औफ वालिदा हज़रते ज़ैनब उम्मुल मसाकीन रज़ि0।
6. आतिका वालिदा उम्मे सलमा रज़ि0।
7. उमैमा वालिदा हज़रते ज़ैनब कुन्नियत उम्मे हकम रज़ि0।
8. सफिय्या वालिदा हज़रते उम्मे हबीबा रज़ि0।
9. मुज़्ज़ा वालिदा हज़रते सफिय्या रज़ि0।
10. हिन्द वालिदा हज़रते मैमूना रज़ि0। (सीरतुन्नबी अल्लामा शिबली नैमानी)।

साहबज़ादों(बेटों) के नामः—

1. हज़रत क़ासिम रज़ि0।
2. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 लक़ब तैयब व ताहिर।
3. हज़रते इब्राहीम रज़ि0 (नबीये रहमत—अली मियां नदवी)।

साहबज़ादियों(बेटियों) के नामः—

1. हज़रते ज़ैनब रज़ि0।
2. हज़रते रूकय्या रज़ि0।
3. हज़रते उम्मे कुलसूम रज़ि0।
4. हज़रते फातिमा ज़हरा रज़ि0 (नबीये रहमत — अली मियां नदवी)।

दामादों के नामः—

1. हज़रत अबुल आस रज़ि0।
2. हज़रते उसमान ग़नी रज़ि0।
3. हज़रते अली रज़ि0 (सीरतुस्सहाबा)।

नवासों (नाती) के नामः—

1. हज़रत अली बिन अबुल आस रज़ि0।
2. हज़रते अब्दुल्लाह बिन उस्मान ग़नी रज़ि0।
3. हज़रते हसन बिन अली रज़ि0।
4. हज़रते हुसैन बिन अली रज़ि0।
5. हज़रत मोहसिन बिन अली रज़ि0,—इनका बचपन में इन्तिकाल हो गया था, (अल्मुर्तज़ा — अली मियां नदवी)।

नवासियों (नातिनों) के नामः—

1. हज़रत उमामा बिन्त अबुल आस रज़ि0।
2. हज़रते ज़ैनब बिन्त अली रज़ि0।
3. हज़रते उम्मे कुलसूम रज़ि0।
4. हज़रते रूकय्या बिन्ते हज़रत अली रज़ि0।

अनमोल बोल

१. ज़्यादा नालायक लड़कों से एक लायक लड़का बहुत ही बेहतर है क्योंकि एक चॉद उस तमाम अंधेरे को दूर कर देता है जिसको लाखों तारे मिलका दूर नहीं कर पाते हैं, इसी तरह शेरनी एक बहादुर बेटे की बदौलत आराम से सोती है जबकि गधी बीसों बेटे रखने के बावजूद बोझ ढोती है।
२. बुरे लोग अच्छी बातों में भी बुरे पहलू तलाश लेते हैं, जैसे मक्खियां पूरे खूब सूरत जिस्म को छोड़कर ज़ख्म पर ही बैठतीं हैं।
३. समन्दर न बरसात में भरता है और न सूखे में सूखता है, इसी तरह उसूल के साथ जीने वाले लोग न कामयाबी से मगरूर होते हैं और न नाकामी से ग़मग़ीन होते हैं।
४. फिजूल खर्ची के कामों की तरफ से लापरवाही न करो चाहे वह कितने ही छोटे हों बल्कि उन्हें बन्द कर दो, क्योंकि नाव में एक छोटा सा सूराख नाव को डुबो देता है।
५. दूसरों पर भरोसा करने वाले इंसान की तरक़्क़ी बहुत सुस्त होती है।

इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानताएँ

डा0 ज़ाकिर नाईक

इस्लाम और हिन्दूइज़्म में तसव्वुरे रिसालतः—

अ — इस्लाम में अंबिया और रसूलः—

अल्लाह के नबी या रसूल वह लोग होते हैं जिन्हें अल्लाह तआला लोगों तक अपना संदेश (पैग़ाम) पहुँचाने के लिए मुंतखिब (निर्वाचित) कर लेता है। नबी हर क़ौम में भेजे गए।

अल्लाह तआला कुरआन में सूरह सूनुस 10 आयत 47 में फ़रमाते हैंः

''और हर उम्मत के लिए एक रसूल है, सो जब उनका वह रसूल आ जाता है, उनका फैसला इंसाफ़ के साथ किया जाता है और उन पर जुल्म नहीं किया जाता।

अल्लाह तआला सूरह नहल 16 आयत 36 में फ़रमाता है।

''हमने हर गिरोह में रसूल भेजा कि (लोगो!) सिर्फ अल्लाह की इबादत करो और इसके सिवा तमाम माबूदों (पूजितें) से बचो। पस बाज़ लोगों को तो अल्लाह ने हिदायत दी और कुछ पर गुमराही साबित हो गई, पस तुम खुद ज़मीन पर चल फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा कुछ हुआ।''

अल्लाह तआला सूरह फ़ातिर 35 आयत 24 में फरमाता हैः

''और कोई उम्मत ऐसी नहीं होती जिस में कोई सचेत करने वाला न गुज़रा हो''

अल्लाह तआला सूरह रअद 13 आयत 7 में फरमाता है।

''और हर जाति के लिए एक मार्ग बताने वाला हुआ है''

कुरआन व हदीस में कुछ पैगम्बरों का जिक्र इन के साथ हैं। हज़रत आदम, हज़रत शीस, हज़रत इदरीस, हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत इस्हाक़, हज़रत याकूब, हज़रत यूसुफ, हज़रत शुऐब, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलेमान, हज़रत इलियास, हज़रत अलयसा, हज़रत मूसा, हज़रत हारून, हज़रत अय्यूब, हज़रत जुलकिफ़ल, हज़रत यूनुस, हज़रत जकरीया, हज़रत यहया, हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम।

कुरआन में चर्चित कुछ अंबिया के क़िस्सेः—

(अ) कुरआन में सूरह निसा 4 आयत 164 में कहा गया हैः

''और आप से पहले बहुत से रसूलों के वाक़ेआत हमने आप से बयान किए हैं और बहुत से रसूलों के नहीं भी किए, और मूसा (अलैहिस्सलाम) से अल्लाह तआला ने साफ़ तौर पर कलाम किया''

(ब) सूरह अलमोमिन 40 आयत 78 में हैः

''वास्तव में'' हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं जिन में से कुछ के (क़िस्से) तो हमने आप से बयान ही नहीं किए।''

अल्लाह ने एक लाख 24 हज़ार पैग़म्बर भेजेः

मिश्कातुल मसाबीह प्रति 3 हदीस नम्बर 5737, अहमद बिन हंबल प्रति 5 पन्ना 265—266 की एक सही हदीस के मुताबिक़ ''अल्लाह ने लगभग''एक लाख 24 हज़ार अंबिया मबऊस

(अवतीर्ण) फ़रमाए''

पिछले पैग़म्बर सिर्फ़ अपनी कौम के लिए भेजे जाते थे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले सभी पैग़म्बर सिर्फ़ अपनी क़ौम और जमाअत के लिए तशरीफ़ लाए और जिस पैग़ाम की इन्होंने तबलीग़ की वह सिर्फ़ उसी वक़्त के लिए ख़ास था।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल0) आख़िरी और ख़ातिमुन्नबीय्यीन हैं।

सूरह अहजाब 33 आयत 40 में ज़िक्र है:

''(लोगो!) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप मुहम्मद (सल्ल0) नहीं लेकिन आप अल्लाह तआला के रसूल हैं और तमाम नबियों के समापक हैं और अल्लाह तआला हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।''

मुहम्मद (सल्ल0) तमाम इंसानों के लिए भेजे गऐ।

चूंकि मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के सबसे आख़िरी नबी हैं , इनके बाद कोई नबी नहीं आएगा इसलिए इन्हें सिर्फ मुसलमानों या अरब के लिए नहीं भेजा गया बल्कि तमाम इंसानों के लिये भेजा गया हैं। कुरआन , सूरह अंबिया 21 आयत 107 में कहा गया है :

''और हमने आप को तमाम जहान वालों के लिये रहमत बनाकर ही भेजा है''

सूरह सबा 34 आयत 28 में ज़िक्र है:

''हमने आपको तमाम लोगों के लिए खुशख़बरियां सुनाने वाला और सचेत (डराने वाला) करने वाला बनाकर भेजा है हॉ मगर (यह सही है कि) लोगों की बहुमत अंजान है।''

सही बुखारी प्रति 1 खंड अस्सलात अध्याय 56 हदीस 429 में ज़िक्र है:

''अल्लाह तआला के नबी ने फ़रमाया कि हर पैग़म्बर को सिर्फ़ उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा गया है लेकिन मुझे तमाम इंसानों के लिए भेजा गया है।

हिन्दूइज़्म में अवतार और पैग़म्बरः—

1. आम हिन्दुओं के अनुसार अवतारः—

एक आम हिन्दु अवतार के विषय में निम्नलिखित विचार रखता है।

अवतार संस्कृत की परिभाषा है। 'अव' का मतलब नीचे और 'तर' का मतलब छोड़ना है। इस तरह अवतार का मतलब हुआ नीचे उतरना या आना। आक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में अवतार का अर्थ हैः (हिन्दू धर्म के अनुसार किसी देवता का नुजूल (अनुलोम) या ज़मीन पर किसी जिस्मानी शक्ल में 'रूह' का आना, आसान शब्दों में एक आम हिन्दू के अनुसार अवतार का मतलब ज़मीन पर किसी जिस्मानी शक्ल में खुदा का उतरना है।)

एक आम हिन्दू का विश्वास है कि खुदा धर्म की रक्षा करने, कार्य शैली नियुक्त करने या इंसानों के लिए सिद्धांत नियुक्त करने के लिए ज़मीन पर किसी जिस्मानी शक्ल में नाज़िल होता है। हिन्दुओं के पवित्र ग्रन्थ सरूती वेद में कहीं भी अवतार का कोई हवाला मौजूद नहीं है। फिर भी स्मृति यानी पुराण और इतिहास में इस का ज़िक्र मिलता है।

हिन्दुइज़्म की सबसे ज़्यादा मक़बूल (मान्य) और पढ़ी जाने वाली पुस्तक में इस का ज़िक्र है।

ऐ भारत! जब जब नेकी में कमी होगी और बदी अपनी उन्नति पर होगी, मैं अपने आपको प्रकट करूँगा। भलाई के बचाओ के लिए, शैतानों की तबाही के लिए और नेकी कायम करने के लिए मैं हर ज़माने में पैदा होता रहूँगा।

भगवद पुराण 9ः 24ः 56 में लिखा है।

जब भी नेकियों में खराबी पैदा होगी और इनमें गिरावट आयेगी और गुनाह हद से ज़्यादा बढ़ जाएंगे, महान खुदा खुद को साकार सूरत में प्रकट करेगा। शेष पेज 27 पर ...

उम्मत के लिये मुहम्मद सल्ल0 की नसीहत

मुफ़्ती शब्बीर अहमद क़ासमी

—:अल्लाह तआला सूरह जुमा आयत न0 2 में फरमाता है:— "अल्लाह तआला की जात वही है जिसने अनपढ़ों के दरमियान उन्हीं में का एक ऐसा रसूल भेजा जो उनके सामने अल्लाह की आएतें पढ़कर सुनाता है और उनको कुफ्र व शिर्क की गन्दगी से पाक करके सवॅारता है और उनको अल्लाह की किताब और हिकमत व दानाई सिखाता है और बेशक वह उससे पहले खुली हुई गुमराही में थे। (सूरे जुमा आयत 2)

नबीए उम्मी के ज़रिए से कुफ्र व शिर्क की गन्दगी से पाक:— आप (सल्ल0) की बेअसत से पहले कुफ्फारे कुरैश में इल्म व हुनर कुछ भी न था और न कोई आसमानी किताब थी। उनमें जिहालत और वहशत मशहूर थी। बुतपरस्ती और फिस्क व फुजूर ही का नाम मिल्लते इब्राहीमी दे रखा था। इसी हालत में अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व करम से उसी कौम में से एक रसूल भेजा जिसका इम्तियाज़ी नाम नबीए उम्मी है। लेकिन उम्मी होने के बावजूद अपनी कौ़म को अल्लाह की सबसे ज़्यादा अजीमुश्शान किताब पढ़कर सुनाता और हैरत अॅगेज अन्दाज से उलूम व मआरिफ और हिक़मत व दानाई की बातें सिखलाकर ऐसा हकीम और शाइस्ता बनाता कि दुनिया के बड़े बड़े हकीम और दानिशवत और आलिम व आरिफ उसके सामने इल्म हासिल करने के लिए अपने आपको झुकाने पर मजबूर हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 को पॅाच बातों की नसीहत:— हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं कि एक दफ़ा जनाबे रसूलुल्लाह (सल्ल0) न यह ऐलान फ़रमाया कि मैं यह पॅाच बातें तुमको पेश करता हॅू तुम में से कैन इन बातों को हासिल करके उन पर अमल करेगा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैं बोल पड़ा या रसूलुल्लाह मैं इस काम के लिये तैयार हॅू तो आप (सल्ल0) ने मेरा हाथ पकड़ कर तरतीब वार पॅाच बातों की नसीहत फरमाई जो इस हदीस शरीफ में मौजूद हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रजि0) फरमाते हैं कि आपने इरशाद फरमाया कि कौन इन बातों को मुझसे लेगा? फिर इन बातों पर खुद अमल करे या ऐसे लोगों को सिखादे जो उन पर अमल करेंगे तो हज़रत अबू हुरैरा फरमाते हैं कि मैंने कहा या रसूलुल्लाह इस काम के लिए मैं तैयार हॅू तो आपने मेरा हाथ पकड़ कर पॅाच बातें गिन कर बतलाईं। (1) हराम चीज़ों से बचो तो तुम लोगों सबसे ज़्यादा आबिद बन जाओगे, (2) और अल्लाह ने जो कुछ तुम्हारे लिए मुक़द्दर फरमाया है उस पर राज़ी हो जाओ तो तुम लोगों में सबसे ज़्यादा ग़नी बन जाओगे, (3) और पड़ोसी के साथ हमदर्दी करो तो तुम मोमिन कामिल बन जाओगे, (4) और दूसरों के लिए वही चीज़ पसन्द करो जो तुम अपने लिए पसन्द करते हो तो तुम कामिल मुसलमान बन जाओगे, (5) कसरत से मत हॅसा करो इसलिए कि कसरत से हॅसने से दिल मुर्दा हो जाता है। (तिरमिज़ी शरीफ 2/56)

नं0 1 सबसे बड़ा आबिद कौन ?

मज़कूरा हदीस शरीफ में आपने इर्शाद फरमाया कि हराम और नाजाइज़ उमूर से अपने आपकी हिफ़ाज़त करोगे तो तुम दुनिया में सबसे बड़े इबादत गुज़ार इंसान शुमार किए जाओगे। हराम से बचने का नाम ही तक़्वा है और जिसमें तक़्वा होगा वह सबसे बड़ा आबिद होगा जैसा कि नमाज़ न पढ़ना हराम है, तो इससे बचने का मतलब यह होगा कि नमाज़ पाबन्दी से पढ़ना है और रमज़ान में रोज़ा न रखना हराम है, तो उससे बचने के लिए रोज़ा रखना होगा और ज़कात न देना नाजाइज़ और हराम है, तो उससे बचने के लिए ज़कात देनी होगी। हज फर्ज होने के बाद हज न करना गुनाह है, उससे बचने के लिए हज करना होगा। झूठ बोलना हराम है, उससे बचने के लिए सच बोलना होगा जो इबादत है। और ख़यानत करना हराम है, उससे बचने के लिए दियानत दारी इख्तियार करनी होगी जो कि इबादत है। नामहरम पर निगाह जमा कर देखना हराम है, उससे बचने के लिए फौरन निगाह को नीची करना होगा जोकि इबादत है। शराब पीना हराम है खुदा के खौफ से उसको तर्क कर देना इबादत है। सिनेमा, फिल्म और गंदे प्रोग्राम देखना हराम है खुदा के खौफ से उसको तर्क कर देना इबादत है। सूदी कारोबार हराम है खुदा के खौफ से तर्क कर देना इबादत है।

गरज कि हर हराम और नाजाइज़ चीज़ों को छोड़ देना इबादत बन जाता है। इसलिए जनाबे रसूलुल्लाह (सल्ल0) ने फरमाया ''अत्क अल महारम तकुन आबिदुन्नास'' हराम चीज़ों को छोड़ दोगे तो तुम दुनिया के तमाम इंसानों में सबसे बड़े आबिद बन जाओगे लिहाज़ा सबसे बड़ा आबिद वही है जिसने हराम को छोड़ दिया है।

नं0 2 सबसे बड़ा गनी और मालदार कौन?

इस दुनिया में सबसे बड़ा गनी और सबसे बड़ा मालदार कौन है? तो जनाबे रसूलुल्लाह (सल्ल0) ने फरमाया कि सबसे बड़ा गनी वही शख्स है कि अल्लाह ने उसके लिए जितना मुकद्दर फरमाया है उस पर वह खुश और खुर्रम रहता है और वह कहता है कि अल्लाह ने जो कुछ मुझे इनायत फ़रमाया है हज़ारों लाखों को इतना भी नसीब नहीं होता है तो सबसे बड़ा गनी न हुआ तो और क्या है?

ऐसा शख्स कभी दौलत के लिए गम व रंज और बेचैनी में नहीं रहता हर वक्त खुश व खुर्रम और बेफिकरी में मस्त रहता है।

हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला का इर्शाद है ऐ इब्ने आदम ऐ इंसान तू मेरी इबादत के लिए वक्त निकाल मैं तेरे सीने को इस्तिगना की दौलत से भर दूंगा। (तिरमिज़ी शरीफ 2/73, अत्तरगीब वत्तरहीब लिलमुनज़री 4/55)

और एक हदीस में आपका इर्शाद है मालदारी दौलत की कसरत से नहीं होती बल्कि कल्ब में इस्तिगना की दौलत से सबसे बड़ी मालदारी आती है आप (सल्ल0) का इर्शाद यह है:
हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि आपका इर्शाद है कि साजो सामान और दौलत की कसरत से मालदारी नहीं होती बल्कि कल्ब के इस्तगना की दौलत से ही मालदारी होती है। (बुखारी शरीफ 2/954, हदीस नं0 6197, मुस्लिम 1/336, तिरमिज़ी 2/62)

और आपने इर्शाद फरमाया कि जो शख्स दौलत की फिक्र में रहता है और जो हासिल हुआ उस पर उसको कनाअत नहीं होती है उसकी मिसाल ऐसी समझो कि कोई शख्स मुसलसल खाता रहता है मगर उसका पेट नहीं भरता यानी पेट तो भर गया मगर सब्र और इतमिनान हासिल नहीं होता। (मुस्लिम शरीफ़ 1/336)

नं0 3 मोमिन कामिल कौन है?

मज़कूरा हदीस शरीफ में आपने तीसरी नसीहत यह फरमाई थी कि अपने पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक और रवादारी और अच्छाई का मुआमला करते रहो तो तुम मोमिन कामिल कहलाए जाओगे इसलिए जिसके दिल में अल्लाह और रसूल की मुहब्बत होती है वही हुस्ने सुलूक करता है।

और हमने पड़ोसियों के हुकूक से मुतअल्लिक मुफस्सल मज़मून (रसूल से सच्ची मुहब्बत) के मज़मून के तहत हदीसे अब्दुर्रहमान बिन अबी काब में ''वलियहसन जवारि मिन जावरा'' के तहत जिक्र कर दिया है उसको देख लिया जाऐ।

नं0 4 कामिल मुसलमान कौन है?

मज़कूरा हदीस शरीफ में आपने चौथी नसीहत यह फ़रमाई थी कि कामिल मुसलमान वही है जो दूसरों के लिए उस चीज़ को पसन्द करता है जो अपने लिए पसन्द करता है। हज़रत इमाम बुख़ारी ने इस मज़मून पर बाकाएदा एक बाब लिखा है कि कोई शख्स उस वक्त तक मोमिन कामिल नहीं हो सकता जब तक दूसरों के लिए वह चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है।

इमाम नसई ने सुनन के नाम से दो किताबें तालीफ़ फ़रमाई है :

(1) सुनने सुगरा जो मदरसा इस्लामियां की आखिरी जमाअत दौरए हदीस शरीफ में पढ़ाई जाती है यह दो जिल्दों में है।

(2) सुनने कुबरा यह छः जिल्दों में है इसमें 11770 हदीसें नकल फरमाई हैं। उनमें बिल्कुल आखिरी हदीस यह है इस हदीस शरीफ में मुसलमानों के साथ ईसार करने की तरग़ीब दी है और जिसके अन्दर ईसार का माद्दा होगा वह सबसे कामिल मोमिन और कामिल तरीन मुसलमान साबित होगा।

एतकादे बातिनी (बातिनी यकीन) को ईमान कहते हैं यानी कल्ब की ताबेदारी से मोमिन बनता है लिहाज़ा पड़ोसी के साथ दिली मुहब्बत और हमदर्दी से मोमिन कामिल बन जाता है।

और एतक़ादे ज़ाहिरी को इस्लाम कहते हैं यानी आमाले ज़ाहिरा में खुदा की इताअत से इस्लाम कामिल होता है लिहाज़ा दूसरों के लिए वही चीज़ पसन्द करना जो अपने लिए पसन्द करता है और दूसरों के लिए कुर्बान कर देना ज़ाहिर अमल से तअल्लुक रखता है। इसलिए आपने फरमाया कि इससे कामिल मुसलमान बन जाओगे। नीज़ दूसरों के लिए ईसार करने वाले में ईमान व इस्लाम दोनों कामिल हो जाते हैं। हदीस शरीफ मुलाहिज़ा हो :

हज़रत अनस से मरवी है कि आप (सल्ल0) का इर्शाद है कि तुम में से कोई उस वक्त तक मोमिन कामिल नहीं हो सकता जब तक कि अपने मुसलमान भाई के लिए वही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है। (बुखारी 1/6 हदीस 13 सुनने कुबरा लिन्नसई 6/538 हदीस 1177, तिरमिज़ी 2/78)।

नं0 5 किसका दिल मुर्दा होता है?

मज़कूरा हदीस शरीफ में आपने पॉचवी नसीहत यह फ़रमाई थी कि तुम कसरत से मत हंसा करो इसलिए कि कसरत से हॅसने कि वजह से इंसान का दिल मुर्दा हो जाता है और दिल मुर्दा होने का मतलब यह है कि नेक आमाल में दिल नहीं लगेगा और आहिस्ता आहिस्ता आमाले सालिहा से दिलचस्पी खत्म होती जाऐगी और आखिरत की फिक्र खत्म होती जाएगी और दिल स्याह होता जाएगा फिर आमाले सालिहा की तौफीक न होगी इसलिए आप ने निहायत एहतमाम से इर्शाद फरमाया कि ''जो मुझे मालूम है वह तुमको भी मालूम हो जाता तो तुम वहुत कम हॅसते और बहुत ज़्यादा रोते। (तिरमिज़ी 2/57)।

इस्लाम में नैतिकता एवं भले काम की महत्ता

एम. इस्लाम मंसूरी

इस्लाम में जिस चीज़ का सबसे अधिक महत्व है, वह है इंसान का चरित्र (चाल चलन) और आचरण (मुआमलात) वास्तव में विश्वास धारण करने और भले काम करने को ही इस्लाम कहते हैं। इसीलिये अल्लाह ने अपने सभी वादों के लिए चाहे वह दुनिया से सम्बन्धित हो या परलोक (आखिरत) से ईमान और अच्छे कर्म की शर्त रखी है। पवित्र कुरआन में ईमान के साथ अनेको स्थान पर सुकर्म (अच्छे काम) का उल्लेख किया गया है।

'मोमिन' 'यहूदी' 'नसारा' (ईसाई), और 'सबाई' कोई हो इन में से जो भी अल्लाह और आखिरत (अन्तिम दिन) पर ईमान लाऐगें और भले कर्म करेंगे उनका बदला तो उनके रब के पास है और (आखिरत) में उन्हें न कोई खौफ (भय) होगा और न वे शोका कुल होंगे।' (कुरआन, 2:62)

इसका मतलब यह है कि अल्लाह को किसी गिरोह से प्रेम या दुशमनी नहीं, वह तो यह चाहता है कि इंसान ईमान और नेक कामों से अपनी झोली भरले। भविष्य की चिन्ता रखने वाले जो व्यक्ति ऐसा करेंगे वे परलोक में अल्लाह के प्रकोय से सुरक्षित रहेंगे और उसके प्रतिदान के अधिकारी होंगे।

जो लोग ईमान लाए और अच्छा काम किये उन्हें हम ऐसे बागों में जगह देंगे जिनके नीचे से नहरें बहती होंगी और वह उनमें सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा और पक्का वादा है। और अल्लाह से ज़्यादा सच बात कहने वाला और कौन हो सकता है? न तुम्हारी कामनाओं से कुछ होता है और न किताब वालों की। जो वयक्ति भी बुरे काम करेगा उसका फल पाएगा (जो उसे सजा से बचा सके)। और जो कोई नेक काम करेगा–मर्द हो या औरत–यदि वह मोमिन है तो वह जन्नत (स्वर्ग) में दाखिल होगा और उस पर तनिक भी ज़ुल्म न होगा।' (कुरआन, 4:122–124)

इन आयतों से कई बातें स्पष्ट हुई। एक यह कि ईमान और नेक काम का फल जन्नत और उसकी सदैव रहने वाली नेमतों के रूप में अवश्य मिलेगा। दूसरी यह कि मोमिन का साधारण से साधारण नेक काम भी व्यर्थ नहीं जाएगा। तीसरी यह कि बुरे कामों के बदले दंड मिल कर रहेगा–यह और बात है कि मनुष्य उससे तौबा करले खुदा की इस सजा से इंसान को खुदा के अतिरिक्त कोई बचा नहीं सकता।

'जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किये कृपाशील प्रभु उनके लिए (दिलों में) प्रेम पैदा कर देगा'। (कुरआन, 19:96)

सत्य धर्म का रास्ता विरोधों और कठिनाईयों से भरा हुआ है, मगर कुरआन की यह आयत बताती है कि कोई गिरोह ईमान और अनुकूल कर्म के गुण रखता हो, तो आखिर कार विरोध समाप्त हो जाता है। लोग सत्य को और सत्य की ओर बुलाने वालों को पहचान लेते हैं और उनकी दुशमनी प्रेम और मुहब्बत में परिवर्तित हो जाती है।

'तुमसे जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक कार्य किये, अल्लाह ने वादा किया है कि उन्हें ज़मीन में सत्ता प्रदान करेगा जिस प्रकार कि उनसे पहले लोगों को सत्ता प्रदान की थी और जो दीन (धर्म) उसने उनके लिए पसन्द किया उसे प्रभुत्व प्रदान करेगा और उनको भय के बाद, निर्भय कर देगा। वे मेरी बन्दगी करेंगे, मेरे साथ

किसी को शरीक न ठहराऐंगे' (कुरआन, 24:55)

कुरआन की इन आयतों से मालूम होता है कि सत्ता (हुकूमत) ऐसे लोगों को मिलती है और धर्म भी उन्हीं के द्वारा प्रभुत्वशाली होता है जिनमें ईमान और भले काम करने के उच्च गुण पाये जाएं। जो गिरोह भी यह गुण पैदा कर लेगा दुनिया में उसे चिन्ता रहित जीवन मिलकर रहेगा। उसे धर्म को प्रभुत्व शाली बनाने का सौ भाग्य प्राप्त होगा और वह सत्ता पाने का अधिकारी समझा जायेगा। भले काम किसी विशेष नेकी को नहीं कहते, बल्कि भला काम यह है कि मोमिन अपनी पूरी ज़िन्दगी में वह रास्ता अपनाए जिससे अल्लाह खुश होता है और जो रसूल (सल्ल0) के अनुसरण का रास्ता है। ऐसा करने पर उसकी पूरी ज़िन्दगी ही भले कामों में समझी जाएगी अर्थात उसका सोना, जागना, खाना, पीना, कमाना और बाल बच्चों को पालना, यहाँ तक कि अपनी पत्नी के पास जाना इन सारे कामों की गणना भले और नेक कामों में होगी, जिसका वह अल्लाह से बदला पायेगा। हदीस में है–

'हलाल (वैध) कमाई की तलाश अस्ल फ़र्ज के बाद एक फ़र्ज है। इस हदीस में कुरआन की सूरा जुमा की इस आयत की ओर संकेत (बैह की शोबुल ईमान) है– ''जब जुमा की नमाज़ अदा हो जाये तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का अनुग्रह (हलाल रोज़ी) तलाश करो और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करो ताकि तुम सफल हो।'' (कुरआन, 62:10)

जिस प्रकार नमाज़ के समय नमाज़ फर्ज़ (अनिवार्य) है उसी प्रकार नमाज़ अदा करने के बाद हलाल कमाई का हासिल करना भी अनिवार्य है और यह अल्लाह की कृपा ही से मिलती है। लेकिन रोज़ी के लिए प्रयास करते समय आवश्यक है कि इंसान अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद रखे, इस तरह वह हराम कमाई से बच सकेगा और दुनिया में धन–दौलत के मोह से भी बचा रहेगा। जब दौलत उसके हाथ आये तो उसे अल्लाह के आदेशानुसार सही कामों में खर्च करें। मनुष्य के लिए सफलता प्राप्त करने का रास्ता यही है। एक अन्य हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमाया–

'एक दीनार (अशरफी) वह है जो तुमने अल्लाह की राह में खर्च किया हो, एक दीनार वह है जो तुमने किसी ग़रीब के लिए दान किया हो और एक दीनार वह है जो तुमने अपने बाल बच्चों पर खर्च किया हो, इनमें सबसे ज़्यादा बदला उस दीनार पर मिलेगा, जो तुमने अपने बाल बच्चों पर खर्च किया होगा।' (मुस्लिम)

इसका मतलब यह है कि जो व्यक्ति अपनी हलाल कमाई से अल्लाह को खुश करने के लिए भलाई के कामों में खर्च करता है और साथ ही अपने बाल बच्चों का हक़ भी अदा करता है, उसे बाल बच्चों पर खर्च करने का असाधारण बदला मिलेगा।

ज्ञात हुआ कि 'भला काम' यह है कि जो काम करो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए, उसकी ओर उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हुए और अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं के भीतर रहते हुए करो।

'भले काम' का सर्व प्रथम और मूल अंश यह है कि मनुष्य का सम्बन्ध अल्लाह से सही हो। 'भले काम' का दूसरा महत्वपूर्ण और मौलिक अंश बन्दों के हक़ और अधिकार को अदा करना है। ''भले काम'' का तीसरा महत्वपूर्ण और बुनियादी पहलू वह है जिसे आम तौर से 'नैतिकता' का नाम दिया जाता है। दीन में नैतिकता के महत्व के इस बात से समझा जा सकता है कि अल्लाह के रसूल (स0) ने अपने आने का उद्देश्य बयान करते हुए फरमाया–'मुझे इस लिये नबी बनाकर भेजा गया है

कि मैं सुशीलता को पूर्ण रूप दूँ। आप (सल्ल0) का कथन यह भी है कि मुझे इसलिये भेजा गया है कि मैं नैतिक श्रेष्ठताओं को पूर्णतः तक पहुँचा दूँ और आपने किया भी यही। आपने नैतिक सिद्धान्तों को बहुत स्पष्ट रूप से बयान किया, उनके महत्व पर प्रकाश डाला, पूरी ज़िन्दगी में उन्हें क्रियान्वित रूप दिया, यह देखे बिना कि दूसरे लोग इन सिद्धान्तों पर चलते हैं या नहीं, इन सिद्धान्तों पर चलने की ताकीद की। लाभ और हानि से वे परवाह हो कर नैतिक सिद्धान्तों से जुड़े रहने का आदेश दिया और उन्हें जाति, परिवार, राज्य और देश हर एक के हित से सर्वोपरि बताया और मानव जीवन को ऐसी जीवन प्रणाली दी, जिसके एक–एक अंश में नैतिक मूल्यों को समाविष्ट कर दिया। इसी जीवन प्रणाली को आप (सल्ल0) ने स्वयं स्थापित किया और इस्लामिक समुदाय को उसे स्थापित और लागू करने पर नियुक्त किया। इसके साथ–साथ आप (सल्ल0) ने नैतिक शिक्षाओं को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप देकर ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जिसका मानव इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता। स्वयं अल्लाह ने आप (सल्ल0) को महान नैतिकता पर प्रतिष्ठित बताया–''

''और निसन्देह तुम महान सुशीलता पर प्रतिष्ठित हो'। (कुरआन, 68:4)

अल्लाह के नबी (सल्ल0) की दृष्टि में सबसे उत्तम व्यक्ति वह है, जो शील–स्वभाव में सबसे अच्छा हो–

ऐसे ही लोग अल्लाह और उसके रसूल को अधिक प्रिय भी है।

हदीस में है–

'मुझे तुम में वे व्यक्ति अधिक प्रिय हैं, जो तुम में सबसे अच्छे स्वभाव वाले हो।'

कुरआन ग़ैर मुस्लिमों की नज़र में

आज मुसलमानों ने कुरआने हकीम को पढ़ना छोड़ दिया है और सजाकर ताकों में रख दिया है जबकि यह वह मुकद्दस किताब है जिसकी तिलाबत में बरकत है बल्कि इसका सुनना, छूना और देखना भी अल्लाह की रहमत का ज़रिया है। इसी कुरआन मजीद की तिलावत का यह असर था कि खैरूल कुरून के मुसलमान अमल में पक्के थे और दुनिया में कामयाब और सुर्खुरूह थे आज हमने कुरआन को छोड़ दिया है और इसी वजह से आज हम दुनिया के हर कोने में ज़लील व ख्वार हैं इसी मुकद्दस किताब के किताब के बारे में ग़ैर मुस्लिमों के बयानात हैं जो उन्होंने कुरआने करीम से मुतअस्सिर होकर लिखे हैं हम से तो वह लोग बेहतर हैं जो कि कुरआन को इतने गौर से पढ़ते हैं, सीखते हैं और इससे फायदा उठाते हैं अल्लाह तआला हम सबको कुरआने करीम पढ़ने, समझने और उस पर अमल करने की तौफीक अता फरमाये। आमीन।।

नीचे कुछ ग़ैर मुस्लिम हज़रात के कुरआन हकीम के मुतअल्लिक खयालात का आइना पेश किया जा रहा है।

१. जार्जसेल:– कुरआन बेशक अरबी जुबान की सबसे बेहतर, बे ऐब और सबसे मुस्तनद किताब है। किसी इंसान का कलम ऐसी मोजिज़ाना किताब नहीं लिख सकता और यह मुर्दों को ज़िन्दा करने से बड़ा मोजिज़ा है।

२. पादरी रेबन्ड जी एम राएड वेल – कुरआन की तालीम ने बुत परस्ती मिटाई जिन्नात और माद्दियात का शिर्कमिटाया अल्लाह की इबादत कायम की और बच्चों के कत्ल की रस्म को नेस्त व नाबूद किया।

३. मोसियो कास्टन कार एडीटर शिगार्ड अखबार – ज़मीन से अगर कुरआन की हुकूमत जाती रही तो दुनिया में अमन व अमान कभी कायम नहीं रह सकता।

४. डैविन पोर्ट – यह अपनी किताब ''मुहम्मद और कुरआन'' में लिखते हैं कुरआन एक मुश्तरिका कानून है मुआशिरती, मुल्की, तिजारती, फौजी, अदालती और ताज़ीरी सब मुआमलात इस में हैं फिर भी यह एक मज़हबी किताब है इसने हर चीज़ को बाक़ायदा और मुकम्मल बना दिया है।

५. रेवन्ड आर मैक्सवेल किंग – यह अपने लेक्चर ''दीन इस्लाम'' में लिखते हैं कि कुरआन इल्हामात का मजमुआ है इस में इस्लाम के उसूल, कवानीन और अखलाक की तालीम रोज़मर्रा के कारोबार की निस्बत बयानात हैं इस लिहाज़ से इस्लाम को ईसाईयत पर बढ़त हासिल है कि इसकी मज़हबी तालीम और कानून इलाहिदा चीजें नहीं हैं।

..... बाकी पेज 16 का ......

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया।

इसी दिन में उनकी तौबा कुबूल की और इसी दिन कयामत भी आयेगी इसलिये निहायत ज़रूरी है कि जुमे के दिन और दिनों से ज़्यादा इबादत की जाये उसकी इज़्ज़त व अजमत की जाये। अल्लाह का जिक्र, तिलावते कुरआन और आप (सल्ल0) पर दरूद व सलाम कसरत से भेजना चाहिए आप (सल्ल0) ने खुद इर्शाद फरमाया है ''इस दिन में मुझपर बहुत दरूद व सलाम भेजा करो''। आप (सल्ल0) ने यह भी इर्शाद फरमाया है कि जुमे के दिन में एक ऐसी साअत (घड़ी) है कि अगर उसमें जायज़ व हलाल चीज़ के लिए दुआ मांगी जाये तो ज़रूर पूरी होती है''। एक दूसरी रवायत के मुताबिक यह वक्त अस्र की नमाज़ से सूरज छुपने तक का वक्त है।

आज भी अगर मुसलमान इस्लाम को तजबूती से थाम लें तो यकीनन उन पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल हों जैसा कि सहाबा र.त.अ. पर नाज़िल हुई थीं, अय अल्लाह हमारे जमूद (जड़ता) को तोड़ दे और हमें इबादत का पूरा जौक व शौक अता फरमा।

बाकी पेज 20 का ...

2. इस्लाम और वेद में अवतार का कोई तसव्वुर नहीं है बल्कि रसूल का है।

इस्लाम इस बात पर विश्वास नहीं रखता कि अल्लाह तआला इंसानी शक्ल धारण करता है। वह इंसानों में से ही किसी इंसान को चुनता है और उच्च स्तर पर सम्बन्ध कायम करता है ताकि वह आम इंसानों तक अपने पैग़ाम को पहुँचा सके। यह चुने हुए लोग अल्लाह के नबी कहलाते हैं।

जैसा कि पहले बयान जा चुका है अवतार 'अव' और 'तर' से बना है जिसका मतलब नीचे आना या उतरना है। कुछ **विद्वानों** का ख़्याल है कि ''खुदा का अवतार'' खुदा से सम्बन्ध को ज़ाहिर करता है और इसका हक़ीक़ी मतलब एक ऐसे इंसान का नुजूल है जिसका अल्लाह के साथ मुख्य सम्बन्ध हो, खुदा के ज़रिये इस क़िस्म के चुने हुए इंसानों की चर्चा चारों वेदों में अनेक स्थानों पर है। इस तरह अगर हम भगवद गीता और **पुराण** की समानता पवित्र ग्रन्थों वेदों से करें और इन दोनों में हमआंहंगी (सहमती) पैदा करें तो हमें इस बात से इत्तिफ़ाक़ करना पड़ेगा कि जब भगवद गीता और **पुराण** 'अवतार' के बारे में कुछ कहते हैं तो इससे मुराद अल्लाह के चुने हुए लोग ही होते हैं। इस्लाम इन लोगों को पैग़म्बरों का नाम देता है।

फलदार दरख़्त

सुलतान नौशेरवाँ ने एक बार एक बूढ़े आदमी को किसी पौधे में पानी देते हुये देखा तो कहा ''जब तक यह पौधा फल देने के लायक होगा उस वक्त तक तुम इस दुनिया को छोड़ चुके होगे फिर अपनी मेहनत तुम क्यों बरबाद कर रहे हो?

बूढ़े ने अदब से जवाब दिया ''आलम पनाह! मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा तो न सही लेकिन मेरे लिये क्या यह कम खुशी की बात है कि इसके फल मेरी औलाद खायेगी''। बूढ़े के इस जवाब से बादशाह बेहद खुश हुआ और उसने अशरफियों की एक थैली बूढ़े को इनाम में दी इनाम पाकर बूढ़े ने बादशाह का शुक्रिया अदा किया और बोला ''हुजूर मेरे पौधे ने तो मेरी ज़िन्दगी ही में फल देना शुरू कर दिया।''

बादशाह बूढ़े की इस हाज़िर जवाबी से और भी ज़्यादा खुश हुआ और उसने अशरफियों की एक और थैली उसे बख़्श दी।

आओ दीन सीखें

मौलाना मो0 इलियास मज़ाहिरी

—:फ़र्ज नमाज़ के बअज़ मसायेलः—

मसलाः— अएन के अलिफ को बढ़ा कर पढ़ना चाहिए, उसके बाद कोई सूरत कुरआन मजीद की पढ़े।

मसलाः— अगर सफर की हालत में हो या कोई ज़रूरत दरपेश हो तो अख्तियार है कि सूरह फातिहा के बाद जो सूरत चाहे पढ़े। अगर सफर और ज़रूरत की हालत न हो तो फ़जर और ज़ोहर की नमाज़ में सूरह हजरात और सूरह बुरूज और उनके दर्मियान की सूरतों में से जिस सूरत को चाहे पढ़े। फजर की पहली रकअत में बनिस्बत दूसरी रकअत के बड़ी सूरत होनी चाहिएं। असर और इशा की नमाज़ में वस्समाइ वत्तारिक और लम यकुन और इनके दर्मियान की सूरतों में से कोई सूरत पढ़नी चाहिए, मग़रिब की नमाज़ में इज़ाजुलज़िलातिल से आखिर तक।

मसलाः— जब रूकू से उठकर सीधा खड़ा हो तो इमाम सिर्फ समिअल्लाहुलिमन हमिदा और मुकतदी सिर्फ रब्बना लकलहम्द और मुनफिरद दोनों कहे फिर तकबीर कहता हुआ दोनों हाथों को घुटनों पर रखे हुए सजदे में जाये तकबीर की इन्तिहा और सजदे की इब्तदा साथ ही हो। यानी सजदे में पहुॅचते ही तकबीर खत्म हो जाये।

मसलाः— सजदे में पहले घुटनों को ज़मीन पर रखना चाहिए फिर हाथों को, फिर नाक, फिर पेशानी को, मुॅह दोनों हाथों के दर्मियान में होना चाहिए और उंगलियॉ मिली हुयी किब्ला की तरफ होनी चाहिए और दोनों पैर उंगलियों के बल खड़े हुए और उंगलियों का रूख किब्ले की तरफ और पेट ज़ागों से अलाहिदा (अलग) और बाज़ू बगल से जुदा हों, पेट ज़मीन से इस कदर ऊँचा हो कि बकरी का बहुत छोटा बच्चा दर्मियान से निकल सके।

मसलाः— फजर, मगरिब, इशा के वक्त पहली दो रकअतों में सूरह फातिहा और दूसरी सूरत और ''समिअल्लाह हुलिमन हमिदा'' और सब तकबीरें इमाम बुलन्द आवाज़ से कहे और मुन्फिरद को किरअत में तो इख्तियार है मगर ''समिअल्लाह हुलिमन हमिदा'' और तकबीरें आहिस्ता कहे और जुहर, असर के वक्त इमाम सिर्फ ''समिअल्लाह हुलिमन हमिदा'' और सब तकबीरें बुलन्द आवाज़ से कहे और मुन्फिरद आहिस्ता और मुकतदी हर वक्त तकबीर वग़ैरह आहिस्ता कहे।

मसलाः— बाद नमाज़ खत्म कर चुकने के दोनों हाथ सीने तक उठाकर फ़ैलाये और अल्लाह तआला से अपने लिये दुआ मांगे और इमाम हो तो तमाम मुकतदियों के लिये भी और बाद दुआ मांग चुकने के दोनों हाथ मुॅह पर फ़ेर ले मुकतदी ख्वाह अपनी अपनी दुआ मांगें या इमाम की दुआ सुनाई दे तो सब आमीन कहते रहें।

मसलाः— जिन नमाज़ों के बाद सुन्नतें हैं, जैसे ज़ोहर, मगरिब, इशा उनके बाद बहुत देर तक दुआ न मांगे बल्कि मुखतशर दुआ मांग कर उन सुन्नतों के पढ़ने में मशगूल हो जाये और जिन नमाज़ों के बाद सुन्नतें नहीं है, जैसे फ़जर, असर के बाद जितनी देर तक चाहे दुआ मांगे और इमाम हो तो मुकतदियों की तरफ दायीं या बायीं रूख मुॅह फ़ेर कर बैठ जाये उसके बाद दुआ मांगे बशर्ते कि कोई मसबूक उसके मुकाबले में नमाज़

न पढ़ रहा हो।

मसलाः— बाद फ़र्ज़ नमाज़ों के बशर्ते कि उन के बाद सुन्नतें न हों वरना सुन्नत के बाद मुसतहिब है कि ''असतगफ़िरूल्लाह हल्लज़ी लाइलाह इल्लाहुवल हय्युल कय्यूम'' तीन मर्तबा आयतल कुर्सी, ''कुलहुवल्लाहु अहद, कुलअऊजु बिरब्बिल फलक़ और कुलअऊजु बिरब्बिल नास'' एक एक मर्तबा पढ़कर तेतीस मर्तबा ''सुबहानअल्लाह'' उसी क़दर ''अलहम्दुलिल्लाह'' और चौतीस मर्तबा ''अल्लाहुअकबर'' पढ़े।

—ःफराएज़ व वाजिबात के मुतअल्लिक बअज़ ज़रूरी मसाएलः—

मसलाः— मिदरक पर किरअत नहीं इमाम की किरअत सब मुकतदियों की तरफ से काफ़ी है और इमाम अबूहनीफा (रज़ि0) के नज़दीक मुकतदियों को इमाम के पीछे किरअत करना मकरूह है।

मसलाः— मसबूक को अपनी गई हुयी किरअतों से एक या दो रकअत में किरअत करना ज़रूरी है।

मसलाः— हासिल यह है कि इमाम के होते हुये मुकतदी को किरअत न करना चाहिए हॉ मसबूक के लिए चूँकि उसकी गयी हुयी रकअतों में इमाम नहीं होता इसके लिए उसको किरअत करना चाहिए।

मसलाः— सजदे के मुकाम को पैरों की जगह से आधा गज़ से ज़्यादा ऊँचा न होना चाहिए। अगर एक बालिस्त से ज़्यादा ऊँचे मुकाम पर सजदा किया जाये तो दुरूस्त नहीं हॉ अगर कोई मजबूरी ही पेश आ जाये तो जाएज़ है।

मसलाः— इमाम को फजर की दोनों रकअतों में और मगरिब और इशा की पहली दो रकअतों में और जुमा और ईदैन और तरावीह की नमाज़ में और रमज़ान के वितर में बुलन्द आवाज़ से किरअत करना वाजिब है।

मसलाः— मुन्फिरद को फजर की दोनों रकअतों में और मगरिब इशा की पहली दो रकअतों में अख्तियार है चाहे बुलन्द आवाज़ से किरअत करे या आहेस्ता आवाज़ से, आवाज़ बुलन्द होने की फक़हा ने यह हद लिखी है कि कोई दूसरा शख्स सुन सके और आहेस्ता आवाज़ की यह हद लिखी है कि खुद सुन सके दूसरा न सुन सके।

मसलाः— इमाम और मुन्फिरद को नमाज़ ज़ोहर असर की कुल रकअतों में और मगरिब व इशा की अखीर रकअतों में आहेस्ता आवाज़ से किरअत करना वाजिब है।

मसलाः— जो नफिल नमाज़ें दिन को पढ़ी जायें उनमें आहेस्ता आवाज़ से किरअत करना चाहिए और जो नफिलें रात को पढ़ी जायें उनमें अख्तियार है।

मसलाः— मुन्फिरद अगर फज़र, मगरिब, इशा की क़ज़ा दिन में पढ़े तो इन में भी उसको आहेस्ता आवाज़ से किरअत करना वाजिब है। और अगर रात को क़ज़ा पढ़े तो उसको अख्तियार है।

मसलाः— अगर कोई शख्स मगरिब या इशा की पहली दूसरी रकअत में सूरत फातिहा के बाद दूसरी सूरत मिलाना भूल जाये तो उसे तीसरी या चौथी रकअत में सूरह फातिहा के दूसरी सूरत पढ़नी चाहिए और उन रकअतों में भी बुलन्द आवाज़ से किरअत करना वाजिब है और आखिर में सजदा सहू करना वाजिब है।

—ःनमाज़ की बअज़ सुन्नतेंः—

मसलाः— तकबीर तहरीमा कहने से पहले दानों हाथों का उठाना। मर्दों को कानों तक और औरतों को शानों तक सुन्नत है उज़्र की हालत में मर्दों को भी शानों तक हाथ उठाने में कुछ हर्ज़ नहीं।

मसलाः— तकबीर तहरीमा के फौरन बाद मर्दों को नाफ़ के नीचे और औरतों को सीने पर हाथ बॉध लेना सुन्नत है।

सातवीं किस्त

जादू की हकीकत कुरआन व हदीस की रोशनी में

अजहर हसन रहीमी

पिछले अंक में हमने बताया था कि जिन्न अगर जादू वाली जगह बता दे और वहॉ पर वह चीज़ मिल जाये जिसके द्वारा जादू किया गया है तो पानी पर निम्न आयतें पढ़कर दम करें:
1. सूरह आराफ की आयत 117 से 122 तक।
2. सूरह यूनुस की आयत 81 से 82 तक।
3. सूरह ताहा की आयत 69 वीं।

फिर उस चीज़ को पानी में डालकर घोल दें और लोगों के निकलने वाले रास्ते से दूर फिकवा दें (जहॉ कोई मिलता न हो)। और अगर जादू लिखाकर या पिलाकर किया गया है तो मरीज़ के पेट में दर्द रहता होगा यदि ऐसा है तो उपरोक्त आयतों के साथ सूरह बकरह की आयत नं0 102 पढ़कर पानी पर दम करके मरीज़ को दें जिसे वह कुछ दिनों तक पीता रहे एवं नहाता रहे।

यदि जिन्न कहे कि मरीज़ का कपड़ा लेकर जादू किया गया है या वह जादू वाली चीज़ को फलांग गया है तो भी उपरोक्त आयतों वाला पानी मरीज़ को पीने और नहाने के वास्ते दें।

एक सप्ताह बाद फिर मरीज़ पर दम करें, यदि कुछ न हो तो जान लें कि जादू टूट चुका है और यदि मरीज़ को दोबारा मिर्गी का दौरा पड़ जाये तो समझ लें कि अभी जादू का असर है और जिन्न ने मरीज़ का पीछा नहीं छोड़ा है। इसलिये फिर बताई गई आयत पढ़कर जिन्न से बात करें कि वह क्यों नहीं गया और उसे जाने को कहें और वापस न आने की कसम ले लें। यदि जिन्न ना नुकुर करे तो तब तक कुरआन की आयतें पढ़कर दम करते रहें जब तक वह चला न जाये।

यदि मरीज़ को दौरा न पड़कर केवल सर में दर्द हो तो आयतल कुर्सी रिकार्ड करके मरीज़ को दें जिसे वह एक माह तक रोज़ाना तीन बार एक–एक घंटा तक सुने। एक माह बाद भी यदि कुछ भारीपन महसूस हो तो सूरह साफ्फात, यासीन, दुख्खान और सूरह जिन्न रिकार्ड करके दें जिसे मरीज़ तीन सप्ताह तक रोज़ाना तीन बार सुने, इंशा अल्लाह मरीज़ बिल्कुल सही हो जायेगा।

<u>दूसरी बातः–</u> मरीज़ पर दम करने से दौरा न पड़े बल्कि सर में तेज़ दर्द, कपकपाहट या चक्कर आये तो उपरोक्त आयतें पढ़कर दम करें, यदि दौरा पड़ जाये तो पहला वाला इलाज करें, और अगर फिर भी दौरा न पड़े बल्कि दर्द में कमी होने लगे तो कुछ दिनों तक ऐसे हीदम करते रहें। फिर भी अगर पूरी तरह फायदा न हो तोः

(1) सूरह साफ्फात व आयतल कुर्सी रिकार्ड करके मरीज़ को सुनने को दें।
(2) मरीज़ नमाज़ पाबन्दी से पढ़े।
(3) फज्र (सुबह) की नमाज़ के बाद ''ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शइइन क़दीर'' रोज़ाना 100 बार एक माह तक पढ़े।

एक माह तक ऐसा करने से 15 दिन तक दर्द बढ़ेगा फिर कम हो जायेगा और एक माह में मरीज़ सही हो जायेगा, उस पर जादू का असर खत्म हो जायेगा। यदि ऐसा न हो तो दूसरे दौर की आयतें पढ़कर दम करें यकीनन मरीज़ को दौरा पड़ जायेगा, बस जैसा बताया गया है वैसा करें।

<u>तीसरी बातः–</u> दूसरे दौर वाली आयतें पढ़ने से मरीज़ को कुछ भी महसूस न हो तो मरीज़ से फिर बीमारी के बारे में पूछे यदि जादू के अधिकतर लक्षण उसमें पाये जायें मगर दम करने से कोई असर न हो रहा हो (हालॉकि ऐसा बहुत कम होता

है) तोः
(1) सूरह यासीन, दुख्खान और सूरह जिन्न रिकार्ड करके दें जिसे रोज़ तीन बार सुने।
(2) मरीज़ रोज़ाना 100 बार इस्तिग़फार पढ़े।
(3) रोज़ाना 100 बार ''ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह'' एक माह तक पढ़े।

एक माह बाद मरीज़ को फिर देखें और आयतें पढ़कर चेक करें।

तीसरा दौर (इलाज के बाद):– यदि अल्लाह आपके द्वारा शिफा दे दे तो अल्लाह का शुक्र अदा करें। साथही मरीज़ को निम्न बातों पर अमल करने का हुक्म दें क्योंकि इलाज होने के बाद जादूगर से दोबारा जादू करने को कहा जा सकता है इसलिये दोबारा उसका असर न हो निम्न बातों पर अमल करें।

1. नमाज़ पाबन्दी से पढ़ें।
2. गाना बजाना न करें।
3. हर काम करने से पहले बिस्मिल्लाह पढे।
4. फज्र की नमाज़ के बाद ''ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ....'' रोज़ाना 100 बार पढ़े।
5. रोज़ाना कुरआन की तिलावत करे या कुरआन सुने।
6. सोने से पहले वज़ू कर ले और आयतल कुर्सी पढ़कर सोये।

शेख वहीद अब्दुस्सलाम बाली ने अपनी किताब ''अस्सारिमुल बत्तार ....'' में कुछ वाकिये लिखे हैं जिन्हें पढ़कर आपको अन्दाज़ा हो जायेगा कि जिन्न से कैसे बात होती है और यदि बात हो तो क्या करना चाहिए।

पहला किस्साः– किसी ने एक औरत पर जादू करवा दिया जिससे वह अपने शौहर से नफरत करने लगी, उसके शौहर ने एक माह तक उसका इलाज कराया मगर कुछ फायदा न हुआ।

कुछ दिनों बाद औरत तलाक़ मांगने लगी, तो शौहर ने एक तलाक दे दी एक सप्ताह तक औरत सही रही तो शौहर ने रूजू कर लिया, इसके बाद वह जिन्न फिर वापस आ गया तब वह अपनी बीवी को मेरे पास लाया, मैं ने उस पर आयतें पढ़ीं तो उसे दौरा पड़ गया और बात चीत शुरू हुईः

मैंः– तुम्हारा नाम क्या है?
जिन्नः– शत्वान।
मैंः– तुम्हारा दीन (धर्म) क्या है?
जिन्नः– नसरानी (ईसाई)।
मैंः– तुम इस औरत पर क्यों आये?
जिन्नः– इसके शौहर से जुदाई करने के लिए।
मैंः– मैं तुम्हें एक पेश कश करता हूँ यदि तुम चाहो तो कुबूल कर लो?
जिन्नः– तुम बेकार परेशान हो रहे हो, मैं इस औरत को छोड़कर नहीं जाऊँगा। इसका शौहर इसे फलॉ –2 लोगों को दिखा चुका है।
मैंः– मैंने तुमसे इस औरत को छोड़ने को नहीं कहा।
जिन्नः– तो तुम क्या चाहते हो?
मैंः– मैं तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूँ यदि कुबूल कर लोगे तो अल्लाह का शुक्र अदा करूँगा, नहीं तो दीन में कोई जबरदस्ती नहीं है। फिर मैंने उसे इस्लाम की दावत दी और काफी देर बात चीत के बाद उसने इस्लाम कुबूल कर लिया। फिर मैं ने पूछा क्या तुमने दिल से अपनी मर्जी से इस्लाम कुबूल किया है या मुझे धोखा दे रहे हो?
जिन्नः– दिल से कुबूल किया है, पर तुम मुझे किसी काम के लिए मजबूर नहीं कर सकते, लेकिन.........।
मैंः– लेकिन क्या?
जिन्नः– मेरे सामने नसरानी जिन्न खड़े हैं जो मुझे कत्ल करने की धमकी दे रहे हैं। (मैं जैसे ही औरत से निकलूँगा वह मुझे कत्ल कर देंगे)
मैंः– यह परेशानी की बात नहीं है क्योंकि अगर तुम दिल से मुसलमान हो चुके हो तो मैं तुम्हें ऐसा

हथियार दे दूँगा कि यह जिन्न तुम्हारे पास भी न आ पायेंगे।
जिन्नः— तो फौरन दो।
मैंः— जब तक हमारी बात पूरी नहीं होती तब तक नहीं दूँगा।
जिन्नः— तो तुम क्या चाहते हो।
मैंः— यदि तुम हक़ीक़त में दिल से मुसलमान हो चुके हो तो तुम्हारी तौबा उस समय तक कुबूल नहीं होगी जब तक तुम ज़ुल्म करना नहीं छोड़ोगे और इस औरत से दूर नहीं जाओगे।
जिन्नः— हॉ मैं दिल से मुसलमान हो गया हूँ और अब कोई ज़ुल्म नहीं करूँगा और मैं औरत से दूर भी चला जाऊँगा, पर जादू से कैसे बचूँगा।
मैंः— ये भी परेशानी की बात नहीं, जबकि मेरी बात मान लो।
जिन्नः— मुझे तुम्हारी सब बातें मंजूर हैं।
मैंः— तो बताओ जादू कहॉ रखा है।
जिन्नः— औरत के घर के सहन में, पर मुझे जगह नहीं पता है। क्योंकि उसकी हिफाज़त के लिए दूसरा जिन्न लगा है। यदि उसे पता चल गया तो वह उसे वहॉ से हटा देगा।
मैंः— तुम कितने साल से जादूगर के साथ हो?
जिन्नः—10 या 20 साल से, और इस बीच मैं 3 औरतों में प्रवेश कर चुका हूँ, ये चौथी है।
मैंः— अब मुझे उस पर यकीन हो गया तो मैंने कहा, लो अब मैं तुम्हें वह हथियार दे देता हूँ।
जिन्नः— वह क्या है?
मैंः— वह आयतलकुर्सी है। इसे पढ़ने से कोई जिन्न तुम्हारे पास न आयेगा। क्या तुम्हें याद है?
जिन्नः— हॉ, मैंने इस औरत से सुनकर याद कर ली है। पर मुझे जादूगर से छुटकारा कैसे मिलेगा?
मैंः— तुम इस औरत को छोड़कर मक्का चले जाओ, वहॉ मोमिन जिन्नों के साथ रहना।
जिन्नः— क्या अल्लाह मुझे माफ कर देगा? मैंने कई औरतों को परेशान किया है।
मैंः— हॉ! क्योंकि वह बहुत बड़ा माफ करने वाला है।

जिन्न यह सुनकर रोने लगा और कहा, मेरे जाने के बाद औरत से कहना कि मुझे माफ कर दे, फिर वह वापस न आने का वादा करके चला गया।